॥ ओ३म् ॥

संस्कृतवाक्यप्रबोधः

श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वतीनिर्मितः

पठनपाठनव्यवस्थायां द्वितीयं पुस्तकम्

प्रकाशक :

वैदिक पुस्तकालय

दयानन्दाश्रम, केसरगंज, अजमेर

प्रकाशक —

वैदिक पुस्तकालय,

दयानन्द आश्रम, अजमेर

३०५००१

इसकी रजिस्टरी कराई गई है

सृष्ट्यब्दः १,९६,०८,५३,०८६

पञ्चदशावृत्तिः

५०००

वि० संवत् २०४३

सन् १९८६

मूल्य

रुपये ५.०० पै.

मुद्रक—

वैदिक यन्त्रालय,

अजमेर

भूमिका

मैंने इस "संस्कृतवाक्यप्रबोध" पुस्तक को बनाना अवश्य इसलिये समझा है कि शिक्षा को पढ़ के कुछ कुछ संस्कृत भाषण का आना विद्यार्थियों को उत्साह का कारण है। जब वे व्याकरण के सन्धिविषयादि पुस्तकों को पढ़ लेंगे तब तो उनको स्वत: ही संस्कृत बोलने का बोध हो जायगा, परन्तु यह जो संस्कृत बोलने का अभ्यास प्रथम किया जाता है, वह भी आगे आगे संस्कृत पढ़ने में बहुत सहाय करेगा। जो कोई व्याकरणादि ग्रन्थ पढ़े बिना भी संस्कृत बोलने में उत्साह करते हैं, वे भी इसको पढ़के व्यवहारसम्बन्धी संस्कृत भाषा को बोल और दूसरे का सुनके भी कुछ कुछ समझ सकेंगे। जब बाल्यावस्था से संस्कृत बोलने का अभ्यास होगा तो उसको आगे आगे संस्कृत बोलने का अभ्यास अधिक अधिक ही होता जायगा। और जब बालक भी आपस में संस्कृत भाषण करेंगे तो उनको देख कर जवान-वृद्ध मनुष्य भी संस्कृत बोलने में रुचि अवश्य करेंगे। जहां कहीं संस्कृत के नहीं जाननेवाले मनुष्यों के सामने दूसरे को अपना गुप्त अभिप्राय समझाना चाहें तो वहां संस्कृत भाषण काम आता है।

जब इसके पढ़ानेवाले विद्यार्थियों को ग्रन्थस्थ वाक्यों को पढ़ावें उस समय दूसरे वैसे ही नवीन वाक्य बना कर सुनाते जावें, जिससे पढ़नेवालों की बुद्धि बाहर के वाक्यों में भी फैल जाय।

और पढ़नेवाले भी एक वाक्य को पढ़के उसके सदृश अन्य वाक्यों की रचना भी करें कि जिससे बहुत शीघ्र बोध हो जाय, परन्तु वाक्य बोलने में स्पष्ट अक्षर, शुद्धोच्चारण, सार्थकता, देश और काल वस्तु के अनुकूल जो पद जहां बोलना उचित हो वहीं बोलना और दूसरे के वाक्यों पर ध्यान देकर सुनके समझना। प्रसन्नमुख, धैर्य, निरभिमान और गम्भीरतादि गुणों को धारण करके क्रोध, चपलता, अभिमान और तुच्छतादि दोषों से दूर रह कर अपने वा किसी के सत्य वाक्य का खण्डन और अपने अथवा किसी के असत्य का मण्डन कभी न करें और सर्वदा सत्य का ग्रहण करते रहें।

इस ग्रन्थ में संस्कृत वाक्य प्रथम और उसके सामने भाषार्थ इसलिये लिखा है कि पढ़नेवालों को सुगमता हो और संस्कृत की भाषा और भाषा का संस्कृत भी यथायोग्य बना सकें।

काशी, फा० शु० ११
[१९३६ वि०]

दयानन्दसरस्वती

अथ विषयसूचीपत्रम्

क्रम	नाम प्रकार	पृष्ठ संं०	क्रम	नाम प्रकरण	पृष्ठ संं०
१	गुरुशिष्यवार्त्तालाप प्रकरणम्	१	१७	गवादिदोहन प्र०	१७
२	नामनिवासस्थान प्र०	३	१८	क्रयविक्रयार्घ प्र०	१७
३	गृहाश्रम प्र०	५	१९	कुसीद प्र०	१८
४	भोजन प्र०	६	२०	उत्तमर्णाधमर्ण प्र०	१८
५	देशदेशान्तर प्र०	७	२१	राजप्रजासम्बन्ध प्र०	१८
६	सभा प्र०	१०	२२	साक्षि प्र०	१८
७	आर्यावर्त्त चक्रवर्त्तिराज्य प्र.	११	२३	सेव्यसेवक प्र०	२१
८	राजप्रजालक्षण-राजनीत्यनीतिप्र०	११	२४	मिश्रित प्र० [१]	२२
९	शत्रुवश प्र०	२१	२५	गमनागमन प्र० [२]	२२
१०	वैश्यव्यवहार प्र०	१३	२६	रोग प्र०	२३
११	कुसीदग्रहण प्र०	१३	२७	मिश्रित प्र० [२]	२४
१२	नौकाविमानादिचालन प्र.	१३	२८	विवाहस्त्रीपुरुषालाप प्र०	२५
१३	क्रयविक्रय प्र०	१४	२९	स्त्रीश्वश्रूश्वशुरादिसेव्य-सेवक प्र०	२६
१४	गमनागमन प्र० [१]	१५	३०	ननन्दभ्रातृजायावाद प्र०	२६
१५	क्षेत्रवपन प्र०	१६	३१	सायंकालकृत्य प्र०	२८
१६	शस्यच्छेदन प्र०	१६	३२	शरीरावयव प्र०	२८

क्रम नाम प्रकरण	पृष्ठ सं०	क्रम नाम प्रकरण	पृष्ठ सं०
३३ राजसभा प्र०	३३	४४ कारु प्र०	४४
३४ ग्राम्यपशु प्र०	३४	४५ अयस्कार प्र०	४५
३५ ग्रामस्थपक्षि प्र०	३६	४६ सुवर्णकार प्र०	४५
३६ वन्यपशु प्र०	३७	४७ कुलाल प्र०	४६
३७ वनस्थपक्षि प्र०	३८	४८ तन्तुवाय प्र०	४६
३८ तिर्यग्जन्तु प्र०	६९	४९ सूचीकार प्र०	४६
३९ जलजन्तु प्र०	४०	५० मिश्रित प्र० [२]	४६
४० वृक्षवनस्पति प्र०	४१	५१ लेख्यलेखक प्र०	५२
४१ औषध प्र०	४२	५२ मन्तव्यामन्तव्य प्र०	५३
४२ आत्मीय प्र०	४३	५३ [परिशिष्ट]	५५-५७
४३ सामन्त प्र०	४४		

※ ओ३म् ※

परमगुरवे परमात्मने नमः

अथ संस्कृतवाक्यप्रबोधः

गुरुशिष्यवार्तालापप्रकरणम्

भोः शिष्य ! उत्तिष्ठ, प्रातःकालो जातः ।	हे शिष्य ! उठ सवेरा हुआ ।
उत्तिष्ठामि ।	उठता हूँ ।
अन्ये सर्वे विद्यार्थिन उत्थिता न वा ?	और सब विद्यार्थी उठे वा नहीं ?
अधुना तु नोत्थिता खलु ।	अभी तो नहीं उठे हैं ।
तानपि सर्वानुत्थापय ।	उन सबको भी उठा दे ।
सर्व उत्थापिताः ।	सब उठा दिये ।
सम्प्रत्यस्माभिः किं कर्त्तव्यम् ?	इस समय हमको क्या करना चाहिए ?
आवश्यकं शौचादिकं कृत्वा सन्ध्यावन्दनम् ।	आवश्यक शरीरशुद्धि करके सन्ध्योपासना ।
आवश्यकं कृत्वा सन्ध्योपासिताऽतः परमस्माभिः किं करणीयम् ?	आवश्यक कर्म करके सन्ध्योपासन कर लिया, इसके आगे हमको क्या करना चाहिये ?
अग्निहोत्रं विधाय पठत ।	अग्निहोत्र करके पढ़ो ।
पूर्वं किं पाठनीयम् ?	पहिले क्या पढ़ना चाहिये ?
वर्णोच्चारणशिक्षामधीध्वम् ।	वर्णोच्चारणशिक्षा को पढ़ो ।
पश्चात्किमध्येतव्यम् ?	पीछे क्या पढ़ना चाहिये ?

किंचित्संस्कृतोक्तिबोधःक्रियताम् ।

पुनः किमभ्यसनीयम् ?
यथायोग्यव्यवहारानुष्ठानाय
प्रयतध्वम् ।
कुतोऽनुचितव्यवहारकर्तुर्विद्यैव
न जायते ।
को विद्वान् भवितुमर्हति ?

यः सदाचारी प्राज्ञः पुरुषार्थी
भवेत् ।
कीदृशादाचार्यादधीत्य पण्डितो
भवितुं शक्नोति ?
अनूचानतः ।
अथ किमध्यापयिष्यते भवता ?

अष्टाध्यायीमहाभाष्यम् ।
किमनेन पठितेन भविष्यति ?
शब्दार्थसम्बन्धविज्ञानम् ।

पुनः क्रमेण किं किमध्येतव्यम् ?
शिक्षाकल्पनिघण्टुनिरुक्तछन्दो-
ज्योतिषाणि वेदानामङ्गानि
मीमाँसावैशेषिकन्याययोगसांख्य-
वेदान्तान्युपाङ्गान्यायुर्धनुर्गान्धर्वार्थो-
पवेदानैतरेयशतपथसामगोपथ-
ब्राह्मणान्यधीत्य ऋग्यजुस्सामाऽ-

कुछ संस्कृत बोलने का ज्ञान किया जाय ।
फिर किसका अभ्यास करना चाहिए ?
यथोचित व्यवहार करने के लिये प्रयत्न करो ।
क्योंकि उल्टे व्यवहार करनेहारे को विद्या ही नहीं होती ।
कौन मनुष्य विद्वान् होने के योग्य होता है ?
जो सत्याचरणशील, बुद्धिमान्, पुरुषार्थी हो ।
कैसे आचार्य से पढ़ के पण्डित हो सकता है ?
पूर्ण विद्यावान् वक्ता से ।
अब आप इसके अनन्तर हमको क्या पढ़ाइयेगा ?
अष्टाध्यायी और महाभाष्य ।
इसके पढ़ने से क्या होगा ?
शब्द, अर्थ और [उनके] सम्बन्धों का यथार्थ बोध ।
फिर क्रम से क्या क्या पढ़ना चाहिए ?
शिक्षा, कल्प, निघण्टु, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष वेदों के अंग । मीमांसा वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त उपाङ्ग । आयुर्वेद, धनुर्वेद गान्धर्ववेद और अर्थवेद उपवेद । ऐतरेय शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मण

थर्ववेदान् पठत ।

ग्रन्थों को पढ़ के ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद को पढ़ो ।

एतत्सर्वं विदित्वा किं कार्य्यम् ?

इन सबको जान के फिर क्या करना चाहिये ?

धर्मजिज्ञासाऽनुष्ठाने एतेषामेवाऽध्यापनं च ।

धर्म के जानने की इच्छा तथा उस का अनुष्ठान और इन्हीं को सर्वदा पढ़ाना ।

नामनिवासस्थानप्रकरणम्

तव किन्नामास्ति ?

तेरा क्या नाम है ?

देवदत्तः ।

देवदत्त ।

कोऽभिजनो युवयोर्वर्त्तते ?

तुम दोनों का जन्मदेश कौन है ?

कुरुक्षेत्रम् ।

कुरुक्षेत्र देश ।

युष्माकं जन्मदेशः को विद्यते ?

तुम्हारा जन्मदेश कौन है ?

पञ्चालाः ।

पञ्जाब ।

भवन्तः कुत्रत्याः ?

आप कहां के हो ?

वयं दाक्षिणात्याः स्मः ।

हम दक्षिणी हैं ।

तत्र का पूर् वः

वहां आपके निवास की कौन नगरी है ?

मुम्बापुरी ।

मुम्बई ।

इमे क्व निवसन्ति ?

ये लोग कहां रहते हैं ?

नयपाले ।

नयपाल में ।

अयं किमधीते ?

यह क्या पढ़ता है ?

व्याकरणम् ।

व्याकरण को ।

त्वया किमधीतम् ?

तूने क्या पढ़ा है ?

न्यायशास्त्रम् ।

न्यायशास्त्र ।

अयं भवदीयश्छात्रः किं प्रचर्चयति?	यह आपका विद्यार्थी क्या पढ़ता है ?
ऋग्वेदम् ।	ऋग्वेद को ।
त्वं किं कर्त्तुं गच्छसि ?	तू क्या करने को जाता है ।
पाठाय व्रजामि ।	पढ़ने के लिये जाता हूँ ।
कस्मादधीषे ?	किससे पढ़ता है ?
यज्ञदत्तात् ।	यज्ञदत्त से ।
इमे कुतोऽधीयते ?	ये किससे पढ़ते हैं ?
विष्णुमित्रात् ।	विष्णुमित्र से ।
त्वयि पठति कियन्तः संवत्सरा व्यतीताः ?	तुझको पढ़ते हुए कितने वर्ष बीते ?
पञ्च ।	पांच ।
भवान् कतिवार्षिकः ?	आप कितने वर्ष के हुए ?
त्रयोदशवार्षिकः ।	तेरह वर्ष के ।
त्वया पठनारम्भः कदा कृतः ?	तूने पढ़ने का आरम्भ कब किया था ?
यदाहमष्टवार्षिकोऽभूवम् ।	जब मैं आठ वर्ष का हुआ था ।
तव मातापितरौ जीवतो न वा ?	तेरे माता-पिता जीते हैं वा नहीं ।
जीवतः ।	जीते हैं ।
तव कति भ्रातरो भगिन्यश्च ?	तेरे कितने भाई और बहिन हैं ?
त्रयो भ्रातर एका च भगिन्यस्ति ।	तीन भाई और एक बहिन है ।
तेषु त्वं ज्येष्ठस्ते, सा, वा ?	उनमें तू ज्येष्ठ वा तेरे भाई अथवा बहिन ?
अहमेवाग्रजोऽस्मि ।	मैं ही सबसे पहिले जन्मा हूँ ।
तव पितरौ विद्वांसौ न वा ?	तेरे माता-पिता विद्या पढ़े हैं वा नहीं ?

महाविद्वांसौ स्तः ।
तर्हि त्वया पित्रोः सकाशात्कुतो न विद्या गृहीता ?
अष्टमवर्षपर्य्यन्तं कृता ।
अत ऊर्ध्वं कुतो न कृता ?
मातृमान् पितृमानाचार्य्यवान् पुरुषो वेदेति शास्त्रविधेः ।

अन्यच्च गृहे कार्यबाहुल्येन निरन्तरमध्ययनमेव न जायते ।
अतः परं कियद्वर्षपर्यन्तमध्येष्यसे?

पञ्चत्रिंशद्वर्षाणि ।

बड़े विद्वान् हैं ।
तो तूने माता-पिता से विद्या ग्रहण क्यों न की ?
आठवें वर्ष पर्यन्त की ।
इससे आगे क्यों न की थी ?
माता-पिता से आठवें वर्ष पर्यन्त, इसके आगे आचार्य से पढ़ने का शास्त्र में विधान है इससे ।
और भी घर में बहुत काम होने से निरन्तर पढ़ना ही नहीं होता ।
इसके आगे कितने वर्ष पर्यन्त पढ़ेगा ?

पैंतीस वर्ष तक ।

गृहाश्रमप्रकरणम्

पुनस्ते का चिकीर्षास्ति ?
गृहाश्रमस्य ।
किं च भोः पूर्णविद्यस्य जितेन्द्रियस्य परोपकारकरणाय संन्यासाश्रमग्रहणं शास्त्रोक्तमस्ति तन्न करिष्यसि ?
किं गृहाश्रमे परोपकारो न भवति?
यादृशः संन्यासाश्रमिणा कर्तुं शक्यते न तादृशो गृहाश्रमिणाऽनेककार्यैः प्रतिबन्धकत्वेनाऽस्य सर्वत्र भ्रमणाशक्यत्वात् ।

फिर तुझको क्या करने की इच्छा है ?
गृहाश्रम की ।
क्यों जी ! जिसको पूर्ण विद्या और जो जितेन्द्रिय है उसको परोपकार करने के लिये संन्यासाश्रम का ग्रहण करना शास्त्रोक्त है, इसको न करोगे ?
क्या गृहाश्रम में परोपकार नहीं होता ?
जैसा संन्यासाश्रमी से मनुष्यों का उपकार हो सकता है वैसा गृहाश्रमी से नहीं हो सकता, क्योंकि अनेक कामों की रुकावट से इसका सर्वत्र भ्रमण ही नहीं हो सकता ।

भोजनप्रकरणम्

नित्यः स्वाध्यायो जातो भोजन-समय आगतो गन्तव्यम् ।

नित्य का पढ़ना-पढ़ाना हो गया, भोजनसमय आया, चलना चाहिये ।

तव पाकशालायां प्रत्यहं भोजनाय किं किं पच्यते ?

तुम्हारी पाकशाला में प्रतिदिन भोजन के लिये क्या क्या पकाया जाता है ?

शाकसूपौदश्वित्कौदनापूपादयः ।

शाक, दाल कढ़ी, भात, पुआ और रोटी आदि ।

किं वः पायसादिमधुरेषु रुचिर्नास्ति ?

क्या आप लोगों की खीर आदि मीठे भोजनों में रुचि नहीं है ?

अस्ति खलु परन्त्वेतानि कदाचिद् कदाचिद् भवन्ति ।

है सही परन्तु ये भोजन कभी कभी होते हैं ।

कदाचिच्छष्कुली श्रीखण्डादयोऽपि भवन्ति न वा ?

कभी पूरी, कचौड़ी, शिखरन आदि भी होते हैं वा नहीं ?

भवन्ति परन्तु यथर्त्तुं योगम् ।

होते हैं परन्तु जैसा ऋतु का योग हो ।

सत्यमस्माकमपि भोजनादिकमेवमेव निष्पद्यते ।

ठीक है, हमारे भी भोजन आदि ऐसे ही बनते हैं ।

त्वं भोजनं करिष्यसि न वा ?

तू भोजन करेगा वा नहीं ?

अद्य न करोम्यजीर्णतास्ति ।

आज नहीं करता अजीर्णता है ।

अधिक भोजनस्येदमेव फलम् ।

अधिक भोजन का यही फल है ।

बुद्धिमता तु यावज्जीर्यते तावदेव भज्यते ।

बुद्धिमान् पुरुष तो जितना पचे उतना ही खाता है ।

अतिस्वल्पे भुक्ते शरीरबलं ह्रसत्यधिके चातः सर्वदा मिताहारी भवेत् ।

बहुत कम और अत्यधिक भोजन करने से शरीर का बल घटता है इससे सब दिन मिताऽऽहारी होवे ।

योऽन्यथाऽऽहारव्यवहारौ करोति स कथं न दुःखी जायेत ?

जो उलट-पलट आहार और व्यवहार करता है वह क्यों न दुःखी होवे ?

येन शरीराच्छ्मो न क्रियते स नैव शरीरसुखमाप्नोति ।

जो शरीर से परिश्रम नहीं करता वह शरीर के सुख को प्राप्त नहीं होता ।

येनात्मना पुरुषार्थो न विधीयते तस्यात्मनो जलमपि न जायते ।

जो आत्मा से पुरुषार्थ नहीं करता उसको आत्मा का बल भी नहीं होता ।

तस्मात्सर्वैर्मनुष्यैर्यथाशक्ति सत्क्रिया नित्यं साधनीया ।

इससे सब मनुष्यों को यथाशक्ति उत्तम कर्मों की साधना नित्य करनी चाहिये ।

भो देवदत्त? त्वामहं निमन्त्रये ।

हे देवदत्त ! मैं तुम्हारा निमन्त्रण करता हूँ ।

मन्येऽहं कदा खल्वागच्छेयम् ?

मैं मानता हूँ परन्तु किस समय आऊँ ?

श्वो द्वितीयप्रहरमध्ये आगन्तव्यम् ।

कल दोपहर दिन चढ़े आना चाहिये ।

आगच्छ भो आसनमध्यास्स्व भवता ममोपरि महती कृपा कृता ।

हे सुजन ! आइये आसन पर बैठिये । आपने मुझ पर बड़ी कृपा की ।

देशदेशान्तरप्रकरणम्

भवानेतान् जानातीमे महाविद्वांसः सन्ति ।

आप इनको जानते हैं ? ये बड़े विद्वान् हैं ।

किन्नामान एते कुत्रत्याः खलु ?

इनके क्या नाम और ये कहां कहां के रहनेवाले हैं ?

अयं यज्ञदत्तः काशीनिवासी ।

यह यज्ञदत्त काशी में निवास करता है ।

विष्णुमित्रोऽयं कुरुक्षेत्रवास्तव्यः ।

यह विष्णुमित्र कुरुक्षेत्र में वसता है ।

सोमदत्तोयं माथुरः ।	यह सोमदत्त मथुरा में रहता है ।
अयं सुशर्मा पर्वतीयः ।	यह सुशर्म्मा पर्वत में रहता है ।
अयमाश्वलायनो दाक्षिणात्योऽस्ति ।	यह आश्वलायन दक्षिणी है ।
अयं जयदेवः पाश्चात्यो वर्तते ।	यह जयदेव पश्चिमदेशवासी है ।
अयं कुमारभट्टो वाङ्गो विद्यते ।	यह कुमारभट्ट बंगाली है ।
अयं कापिलेयः पाताले निवसति ।	यह कापिलेय पाताल अर्थात् अमेरिका में रहता है ।
अयं चित्रभानुर्हरिवर्षस्थः ।	यह चित्रभानु हिमालय से उत्तर हरिवर्ष अर्थात् यूरोप में रहता है ।
इमौ सुकामसुभद्रौ चीननिकायौ ।	ये सुकाम और सुभद्र चीन के वासी हैं ।
अयं सुमित्रो गन्धारस्थायी ।	यह सुमित्र गन्धार अर्थात् काबुल कन्धार का रहनेवाला है ।
अयं सुभटो लङ्काजः ।	यह सुभट लंका में जन्मा है ।
इमे पंच सुवीरातिबलसुकर्मसुधर्म-शतधन्वानो मारवाः ।	सुवीर, अतिबल, सुकर्मा, सुधर्मा और शतधन्वा ये पांच मारवाड़ के रहने-वाले हैं ।
एते मया ऽऽमन्त्रिताः स्वस्वस्था-नादागताः ।	ये सब मेरे बुलाये हुए अपने अपने घर से आये हैं ।
इमे नव शिवकृष्णगोपालमाधव-सुचन्द्रप्रक्रमभूदेवचित्रसेन महारथा अत्रत्याः ।	शिव, कृष्ण, गोपाल, माधव, सुचन्द्र, प्रक्रम, भूदेव, चित्रसेन और महारथ ये नव इस मध्य देश के रहनेवाले हैं ।
अहोभाग्यं मे यद् भवत्कृपयैतेषा-मपि समागतो जातः ।	मेरा बड़ा भाग्य है कि जो आपकी कृपा से इन सत्पुरुषों का भी मिलाप हुआ ।

अहमपि सभवतः सर्वानेतान्नि-
मन्त्रयितुमिच्छामि ।

मैं भी आपके समेत इन सबका निमन्त्रण करना चाहता हूँ ।

अस्माभिर्भवन्निमन्त्रणमूरीकृतम् ।

हमने आपका निमन्त्रण स्वीकार किया ।

प्रीतोऽस्मि परन्तु भवद्भोजनार्थं
किं किं पक्तव्यम् ?

आपके निमन्त्रण मानने से मैं बड़ा प्रसन्न हुआ परन्तु आपके भोजन के लिये क्या क्या पकाया जाय ?

यद्यद्भोक्तुमिच्छास्ति तत्तदाज्ञाप-
यन्तु ।

जिस जिस पदार्थ के भोजन की इच्छा हो उस उसकी आज्ञा कीजिये ?

भवान् देशकालज्ञः कथनेन किं
यथायोग्यमेव पक्तव्यम् ।

आप देशकाल को जानते हैं कहने से क्या, यथायोग्य ही पकाना चाहिये ।

सत्यमेव मेर करिष्यामि ।

ठीक है, ऐसा ही करूंगा ।

उत्तिष्ठत भोजनसमय आगतः
पाकः सिद्धो वर्त्तते ।

उठिये, भोजन-समय आया, पाक तैयार है ।

भो भृत्य ! पाद्यमर्घ्यमाचमनीयं
जलं देहि ।

हे नौकर ! इनको पग, हाथ, मुख धोने के लिये जल दे ।

इदमानीतं गृह्यताम् ।

यह लाया, लीजिये ।

भो पाचकाः ! सर्वान् पदार्थान्
क्रमेण परिवेविष्ट ।

हे पाचक लोगो ! सब पदार्थों को क्रम से परोसो ।

भुञ्जीध्वम् ।

भोजन कीजिये ।

भोजनस्य सर्वे पदार्थाः श्रेष्ठा न
वा ?

भोजन के सब पदार्थ अच्छे हुए हैं वा नहीं ?

अत्युत्तमाः सम्पन्नाः किं कथ-
नीयम् ।

क्या कहना है, बड़े उत्तम हुए हैं ।

भवता किञ्चित् पायसं ग्राह्यं
यस्येच्छाऽस्ति वा ।

आप थोड़ीसी खीर लीजिये वा जिसकी इच्छा हो ।

प्रभूतं भुक्तं तृप्ताः स्मः ।	बहुत रुचि से भोजन किया, तृप्त हो गये हैं ।
तद्यु॑त्तिष्ठत ।	तो उठिये ।
जलं देहि ।	जल दे ।
गृह्यताम् ।	लीजिये ।
ताम्बूलादीन्यानीयन्ताम् ।	पान बीड़े, इलायची आदि लाओ ।
इमानि सन्ति गृह्णन्तु ।	ये हैं, लीजिये ।

सभाप्रकरणम्

इदानीं सभायां काचिच्चर्च्चा विधेया ।	अब सभा में कुछ वार्तालाप करना चाहिये ।
धर्म्मः किं लक्षणोऽस्तीति पृच्छामि ?	मैं पूछता हूँ कि धर्म्म का क्या लक्षण है ?
वेदप्रतिपाद्यो न्याय्यः पक्षपातरहितो यश्च परोपकारसत्याऽऽचरणलक्षणः ।	वेदोक्त, न्यायानुकूल, पक्षपातरहित और जो पराया उपकार तथा सत्याचरणयुक्त है उसी को धर्म जानना चाहिये ।
ईश्वरः कोऽस्तीति ब्रूहि ।	ईश्वर किसको कहते हैं, आप कहिये ?
यः सच्चिदानन्दस्वरूपः सत्यगुणकर्मस्वभावः ।	जो सच्चिदानन्दस्वरूप और जिसके गुण, कर्म, स्वभाव सत्य ही हैं वह ईश्वर कहाता है ।
मनुष्यैः परस्परं कथं कथं वर्त्तितव्यम् ।	मनुष्यों को एक दूसरे के साथ कैसे कैसे वर्त्तना चाहिये ?
धर्म्मसुशीलतापरोपकारैः सह यथायोग्यम् ।	धर्म, श्रेष्ठ स्वभाव और परोपकार के साथ जिनसे जैसा व्यवहार करना योग्य हो वैसा ही उनसे वर्त्तना चाहिये ।

आर्य्यावर्त्तचक्रवर्त्तिराजप्रकरणम्

अस्मिन्नार्यावर्त्ते पुरा के के चक्रवर्त्तिराजा अभूवन् ?
स्वायंभुवाद्या युधिष्ठिरपर्यन्ताः ।
चक्रवर्त्तिशब्दस्य कः पदार्थः ?
य एकस्मिन् भूगोले स्वकीयामाज्ञां प्रवर्त्तयितु समर्थाः ।

ते कीदृशीमाज्ञां प्राचीचरन् ?
यया धार्मिकाणां पालनं दुष्टानां च ताडनं भवेत् ।

इस आर्य्यावर्त्त देश में पहिले कौन-कौन चक्रवर्ती राजा हुए हैं ?
स्वयम्भू से लेके युधिष्ठिर पर्य्यन्त ।
चक्रवर्ती शब्द का क्या अर्थ है ।
जो एक भूगोल भर में अपनी राजनीतिरूप आज्ञा को चलाने में समर्थ हों ।
वे कैसी आज्ञा का प्रचार करते थे ?
जिससे धर्मियों का पालन और दुष्टों का ताड़न होवे ।

राजप्रजालक्षणराजनीत्यनीतिप्रकरणम्

राजा को भवितुं शक्नोति ?
यो धार्मिकाणां सभाया अधिपतित्वे योग्यो भवेत् ।
यः प्रजां पीडयित्वा स्वार्थं साधयेत् स राजा भवितुमर्होऽस्ति न वा ?

नहि नहि नहि स तु दस्युः खलु ।
या राजद्रोहिणी सा तु न प्रजा किन्तु स्तेनतुल्या मन्तव्या ।

कथं भूताः जनाः प्रजा भवितुमर्हाः?
ये धार्मिकाः सततं राजप्रियकारिणश्च ।

राजा कौन हो सकता है ?
जो धर्मात्माओं की सभा का सभापति होने योग्य होवे ।
जो प्रजा को दुःख देकर अपना प्रयोजन साधे वह राजा हो सकता है वा नहीं ?
नहीं नहीं नहीं, वह तो डाकू ही है ।
जो राजव्यवहार में विरोध करे वह प्रजा तो नहीं किन्तु उसको चोर के समान जानना चाहिये ।
कैसे मनुष्य प्रजा होने को योग्य हैं ?
जो धर्मात्मा और निरन्तर राजा के प्रियकारी हों ।

राजपुरुषैरप्येवमेव प्रजाप्रिय-कारिभिः सदा भवितव्यम् ।

राजसम्बन्धी पुरुषों को भी वैसे ही प्रजा के प्रिय करने में सदा रहना चाहिये ।

शत्रुवशकरणप्रकरणम्

एते शत्रुभिः सह कथं वर्त्तेरन् ?
राजप्रजोत्तमपुरुषैररयः सामदाम-भेददण्डैर्वशमानेयाः ।

ये लोग शत्रुओं के साथ कैसे वर्त्तें ?
राजा और प्रजा के श्रेष्ठ पुरुषों को योग्य है कि अरियों को (साम) मिलाप (दाम) कुछ देना (भेद) आपस में उनको फोड़ देना और (दण्ड) उनको दण्ड करके वश में करें ।

सदा स्वराज्यप्रजासेनाकोषधर्म-विद्यासुशिक्षा वर्द्धनीयाः ।

सब दिन अपना राज्य, प्रजा, सेना, कोष, धर्म्म, विद्या और श्रेष्ठ शिक्षा बढ़ाते रहना चाहिये ।

यथाऽधर्माविद्यादुष्टशिक्षादस्यु-चोरादयो न वर्द्धेरस्तथा सतत-मनुष्ठेयम् ।

जिस प्रकार से अधर्म, अविद्या, बुरी शिक्षा, डाकू और चोर आदि न बढ़ें वैसा निरन्तर पुरुषार्थ करना चाहिये ।

धार्मिकैः सह कदापि न योद्ध-व्यम् ।

धर्मात्माओं के साथ कभी लड़ाई न करनी चाहिये ।

निर्जिता अपि दुष्टा विनयेन सत्कर्त्तव्याः ।

पराजित किये शत्रुओं का भी विनय के साथ मान करना चाहिये ।

राजप्रजाजनाः प्राणवत् परस्परं सम्पोष्य सुखिनो भवन्तु ।

राजा और प्रजा प्राण के तुल्य एक दूसरे की पुष्टि करके सदा सुखी रहें ।

कर्षिते क्षयरोगवदुभे विनश्यतः ।

एक दूसरे को निर्बल करने से दमा रोग के समान दोनों निर्बल होकर नष्ट हो जाते हैं ।

सदा ब्रह्मचर्येण विद्यया च शरीरात्मबलं वर्धनीयम् ।	सब काल में ब्रह्मचर्य और विद्या से शरीर और आत्मा का बल बढ़ाते रहना चाहिये ।
यथादेशकालं पुरुषार्थेन यथावत् कर्माणि कृत्वा सर्वथा सुखायितव्यम् ।	देश काल के अनुसार उद्यम से ठीक ठीक कर्म करके सब प्रकार सुखी रहना चाहिये ।

वैश्यव्यवहारप्रकरणम्

वैश्याः कथं वर्त्तेरन् ?	बनिये लोग कैसे वर्त्तें ।
सर्वां देशभाषा लेखाव्यवहारं च विज्ञाय पशुपालनक्रयविक्रयादिव्यापारकुसीदवृद्धिकृषिकर्माणि धर्मेण कुर्वन्तः ।	सब देशभाषा और हिसाब को ठीक ठीक जानकर पशुओं की रक्षा, लेन-देन आदि व्यवहार, व्याजवृद्धि और खेती-कर्म धर्म के साथ करते हुए ।

कुसीदग्रहणप्रकरणम्

यद्येकवारं दद्याद् गृह्णीयाच्च तर्हि कुसीदवृद्ध्या द्वैगुण्ये धर्मोऽधिकेऽधर्म इति वेदितव्यम् ।	जो एक बार दें लें तो व्याजवृद्धि सहित मूलधन द्विगुण तक लेने में धर्म और अधिक लेने में अधर्म होता है, ऐसा जानना चाहिये ।
प्रतिमासं प्रतिवर्षं वा यदि कुसीदं गृह्णीयाद्यदा समूलं द्विगुणं धनमागच्छेत्तदा मूलमपि त्याज्यम् ।	जो महीने महीने में अथवा वर्ष वर्ष में व्याज लेता जाय तो जब दूना धन आजाय फिर आगे कुछ भी न लेना चाहिये ।

नौकाविमानादिचालनप्रकरणम्

त्वं नौकाश्चालयसि न वा ?	तू नावें चलाता है वा नहीं ?
चालयामि ।	चलाता हूँ ।

नदीषु समुद्रेषु वा ?	नदियों अथवा समुद्रों में ?
उभयत्र चालयामि ।	दोनों में चलाता हूँ ।
कस्यां दिशि कस्मिन्देशे च गच्छन्ति ।	किस दिशा और किस देश में जाती हैं ?
सर्वासु दिक्षु पातालदेशपर्य्यन्तम् ।	सर्व दिशाओं में पातालदेश अर्थात् अमेरिका देश पर्य्यन्त ।
ताः कीदृश्यः सन्ति केन चलन्ति?	वे नौका कैसी और किससे चलती हैं ?
कैवर्त्तवाय्वग्निजलकलावाष्पादिभिः।	मल्लाह, वायु और अग्नि जल कला-यन्त्र और भाफ आदि से ।
याः पुरुषाश्चालयन्ति ता ह्रस्वाःया महत्यस्ता वाय्वादिभिश्चाल्यन्ते ताश्चाश्वतरीश्यामकर्णाश्वाख्याः सन्ति ।	जिनको मनुष्य चलाते हैं वे छोटी छोटी नौका और जो बड़ी होती हैं वे वायु आदि से चलाई जातीं हैं उनके अश्वतरी और श्यामकरणाश्व आदि नाम हैं ।
विमानादिभिरपि सर्वत्र गच्छाम-आगच्छामश्च	और विमान आदि से भी सर्वत्र जाया-आया करते हैं ।

क्रयविक्रयप्रकरणम्

अस्य किम्मूल्यम् ?	इसका क्या मूल्य है ?
पञ्च रूप्याणि ।	पांच रुपये ।
गृहाणेदं वस्त्रं देहि ।	लीजिये पांच रुपये यह वस्त्र दीजिये ।
अद्यश्वो घृतस्य कोऽर्घः ?	आजकल घी का क्या भाव है ?
मुद्रैकया सपादप्रस्थं विक्रीणते ?	एक रुपया का सवासेर बेचते हैं ।
गुडस्य को भावः ?	गुड़ का क्या भाव है ?
अष्टभिः पणैरेकसेटकमात्रं ददति ।	दो आने का एक सेर भर देते हैं ।

त्वमापणं गच्छ एलामानय ।
आनीता गृहाण ।
कस्य हट्टे दधिदुग्धे अच्छे प्राप्नुतः ?
धनपालस्य ।
स सत्येनैव क्रयविक्रयौ करोति
श्रीपतिर्वणिक्कीदृशोऽस्ति ?
स मिथ्याकारी ।
अस्मिन्संवत्सरे कियांल्लाभो व्ययश्च जातः ?
पंच लक्षाणि लाभो लक्षद्वयस्य व्ययश्च ।
मम खल्वस्मिन् वर्षे लक्षत्रयस्य हानिर्जाता ।
कस्तूरी कस्मादानीयते ?
नयपालात् ।
बहुमूल्यमाविकं कुत आनयन्ति ?
कश्मीरात् ।

तू दुकान पर जा, इलायची ले आ ।
ले आया, लीजिए ।
किसकी दुकान पर दूध और दही अच्छे मिलते हैं ?
धनपाल की ।
वह सत्य ही से लेन-देन करता है ।
श्रीपति बनियां कैसा है ?
वह झूठा है ।
इस वर्ष में कितना लाभ और खर्च हुआ ?
पांच लाख रुपये लाभ और दो लाख खर्च हुए ।
मेरी तो इस वर्ष में तीन लाख की हानि हो गई ।
कस्तूरी कहां से लाई जाती है ?
नयपाल से ।
दुशाले आदि कहां से लाते हैं ?
कश्मीर से ।

गमनागमनप्रकरणम् [१]

कुत्र गच्छसि ?
पाटलिपुत्रकम् ।
कदाऽऽगमिष्यसि ?
एकमासे ।
स क्व गतः ?
शाकमानेतुम् ।

कहाँ जाते हो ?
पटने को ।
कब आओगे ?
एक महीने में ।
वह कहाँ गया ?
शाक लेने को ।

क्षेत्रवपनप्रकरणम्

क्षेत्राणि कर्षन्तु ।
बीजान्युप्तानि न वा ?
उप्तानि ।
अस्मिन् क्षेत्रे किमुप्तम् ?
ब्रीहयः ।
एतस्मिन् ?
गोधूमाः ।
अस्मिन् किं वपन्ति ?
तिलमुद्गमाषाढकीः ।
एतस्मिन् किमुप्यते ?
यवाः ।

खेत जोतो ।
बीज बोये वा नहीं ?
बो दिये ।
इस खेत में क्या बोया है ?
धान ।
इसमें ?
गेहूँ ।
इस खेत में क्या बोते हैं ?
तिल, मूंग, उड़द और अरहर ।
इसमें क्या बोया जाता है ?
जौ ।

शस्यच्छेदनप्रकरणम्

संप्रति केदाराः पक्वाः ।
यदि पक्वाः स्युस्तर्हि लुनन्तु ।
इदानीं कृषीवला अन्योन्यकेदारान् व्यतिलुनन्ति ।

इस समय खेत पक गये हैं ।
जो पक गये हों तो काटो ।
इस समय खेती करनेवाले आपस में एक दूसरे का पारापारी खेत काटते हैं ।

ऐषमे धान्यानि प्रभूतानि जातानि ।
अत एवैकस्या मुद्राया गोधूमाः खारीप्रमिता अन्यानि तण्डुलादीन्यपि किञ्चदधिकन्यूनानि मिलन्ति ।

इस साल में धान्य बहुत हुए हैं ।
इसी से एक रुपये के गेहूँ एक मन और चावल आदि अन्न भी मन से कुछ अधिक वा न्यून मिलते हैं ।

गवादिदोहनपरिमाणप्रकरणम्

इयं गौर्दुग्धं ददाति न वा ?
ददाति ।
इयं महिषी कियद्दुग्धं ददाति ?
दशप्रस्थाः ।
तवाऽजावयः सन्ति न वा ?
सन्ति ।
प्रतिदिनं ते कियद्दुग्धं जायते ?
पञ्च खार्यः ।
नित्यं किंपरिमाणे घृतनवनीते भवतः ।
सार्द्धद्वादशप्रस्थे ।
प्रत्यहं कियद् भुज्यते कियच्च विक्रीयते ?
सार्धद्विप्रस्थं भुज्यते दशप्रस्थं च विक्रीयते ।

यह गौ दूध देती है वा नहीं ?
देती है ।
यह भैंस कितना दूध देती है ?
दश सेर ।
तेरे बकरी भेड़ हैं वा नहीं ?
हैं ।
नित्य तेरे कितना दूध होता है ?
पांच मन ।
प्रतिदिन कितना घी और मक्खन होता है ?
साड़े बारह सेर ।
प्रतिदिन कितना खाया जाता और कितना बिकता है ?
अढ़ाई सेर खाया जाता और दश सेर बिकता है ।

क्रयविक्रयार्घप्रकरणम्

एतद्रूप्यैकेन कियन् मिलति ?
त्रित्रिप्रस्थम् ।
तैलस्य कियन्मूल्यम् ?
मुद्रापादेन सेटकद्वयं प्राप्यते ।
अस्मिन्नगरे कति हट्टास्सन्ति ?
पञ्चसहस्राणि ।

ये घी और मक्खन एक रुपया का कितना मिलता है ?
तीन तीन सेर ।
तैल का क्या मूल्य है ?
चार आने का दो सेर मिलता है ।
इस नगर में कितनी दूकानें हैं ?
पाँच हजार ।

कुसीदप्रकरणम्

शतं मुद्रा देहि ।	सौ रुपये दीजिए ।
ददामि परन्तु कियत् कुसीदं दास्यसि ?	देता हूँ परन्तु कितना व्याज देगा ?
प्रतिमासं मुद्रार्द्धम् ।	प्रति महीने आठ आना ।

उत्तमर्णाधमर्णप्रकरणम्

भो अधमर्ण ! यावद्धनं त्वया पूर्वं गृहीतं तदिदानीं देहि ।	हे ऋणिया ! जो धन तूने पहिले लिया था वह अब दे ।
मम सांप्रतं तु दातुं सामर्थ्यं नास्ति ।	मेरा इस समय तो देने का सामर्थ्य नहीं है ।
कदा दास्यसि ?	कब देगा ?
मासद्वयाऽनन्तरम् ।	दो महिने के पीछे ।
यद्येतावति समये न दास्यसि चेत्तर्हि राजनियमान्निग्रहीष्यामि ।	जो तू इतने समय में न देगा तो राज-प्रबन्ध से पकड़ा के लूंगा ।
यद्येवं कुर्य्यां तर्हि तथैव ग्रहीतव्यम् ।	जो ऐसा करूं तो वैसे ही लेना ।

राजप्रजासम्बन्धप्रकरणम्

भो राजन् ! ममायमृणं न ददाति ।	हे राजन् ! मेरा यह ऋण नहीं देता ।
यदा तेन गृहीतं तदानीन्तनः कश्चित् साक्षी वर्त्तते न वा ?	जब उसने लिया था उस समय का कोई साक्षी वर्त्तमान है वा नहीं ?
अस्ति ।	है ।
तर्ह्यानय ।	तो लाओ ।
आनीतोऽयमस्ति ।	लाया यह है ।

साक्षिप्रकरणम्

भोः साक्षिस्त्वमत्र किञ्चिज्जानासि न वा ?	हे साक्षी ! तू इस विषय में कुछ जानता है वा नहीं ?

जानामि ।	जानता हूँ ।
यादृश जानासि तादृशं सत्यं ब्रूहि ।	जैसा जानता है वैसा सच कह ।
सत्यं वदामि ।	सत्य कहता हूँ ।
अस्मादनेन मत्समक्षे सहस्रं मुद्रा गृहीताः ।	इससे इसने मेरे सामने सहस्र रुपये लिये थे ।
ओ भृत्य ! तं शीघ्रमानय ।	ओ नौकर ! उसको जल्दी ले आ ।
आनयामि ।	लाता हूँ ।
गच्छ राजसभायां राज्ञा त्वमाहूतोऽसि ।	चल राजसभा में राजा ने तुझको बुलाया है ।
चलामि ।	चलता हूँ ।
भो राजन्नुपस्थितस्सः ।	हे राजन् ! वह आया है ।
त्वयाऽस्यर्णं कुतो नादायि ?	तूने इसका ऋण क्यों नहीं दिया ?
अस्मिन् समये तु मम सामर्थ्यन्नास्ति षण्मासानन्तरं दास्यामि ।	इस समय तो मेरा सामर्थ्य नहीं है परन्तु छः महीने के पीछे दूंगा ।
पुनर्विलम्बन्तु न करिष्यसि ?	फिर देर तो न करेगा ?
महाराज ! कदापि न करिष्यामि ।	महाराज ! कभी न करूंगा ।
अच्छ गच्छ धनपाल ! यदि सप्तमे मास्ययं न दास्यति तर्ह्यनं निगृह्य दापयिष्यामि ।	अच्छा जाओ धनपाल ! जो यह सातवें महीने में न देगा तो इसको पकड़ के दिला दूंगा ।
अयं मम शतं मुद्रा गृहीत्वाऽधुना न ददाति ।	यह मेरे सौ रुपये लेके अब नहीं देता ।
किं च भो यदयं वदति तत् सत्यं न वा ?	क्योंजी ! जो यह कहता है वह सच है वा नहीं ?
मिथ्यैवाऽस्ति ।	झूंठ ही है ।
अहन्तु जानाम्यपि नाऽस्य मुद्रा मया कदा स्वीकृताः ।	मैं तो जानता भी नहीं कि इसके रुपये मैंने कब लिये थे ।

उभयोस्साक्षिणः सन्ति न वा ?
सन्ति ।
कुत्र वर्त्तन्ते ?
इम उपतिष्ठन्ते ।
अनेन युष्माकं समक्षे शतं मुद्रा दत्ता न वा ?
दत्तास्तु खलु ।
अनेन शतं मुद्रा गृहीता न वा ?
वयं न जानीमः ।
प्राड्विवाकेनोक्तम्—
"अयमस्य साक्षिणश्च सर्वे मिथ्यावादिनः सन्ति ।
कुत इदमेतेषां परस्परं विरुद्धबचोऽस्ति ।
यतस्त्वया मिथ्यालपितमतएव तवैकसंवत्सरपर्य्यन्तं कारागृहे बन्धः क्रियते ।
अयमुत्तमर्णस्त्वदीयान् पदार्थान् गृहीत्वा विक्रीय वा स्वर्णं ग्रहीष्यति ।
अयं मदीयानि पञ्चशतानि रूप्याणि स्वीकृत्य न ददाति ।
कुतो न ददासि ?
मया नैव गृहीताः कथं दद्याम् ?
अयम्मम लेखोऽस्ति पश्य तम् ।
आनय ।
गृह्यताम् ।

दोनों के साक्षी लोग हैं वा नहीं हैं ?
हैं ।
कहां वर्त्तमान हैं ?
ये खड़े हैं ।
इसने तुम्हारे सामने सौ रुपये दिये वा नहीं ?
निश्चित दिये तो हैं ।
इसने सौ रुपये लिये वा नहीं ?
हम नहीं जानते ।
वकील ने कहा—
यह और इसके साक्षी लोग सब झूंठ बोलनेवाले हैं ।
क्योंकि यह इन लोगों का वचन परस्पर विरुद्ध है ।"
जिससे तूने झूंठ बोला इसी कारण तेरा एक वर्ष तक बन्दीघर में बन्धन किया जाता है ।
यह सेठ तेरे पदार्थों को लेकर अथवा बेच के अपने ऋण को ले लेगा ।
यह मेरे पांच सौ रुपये लेकर नहीं देता ।
तू क्यों नहीं देता ?
मैंने लिये ही नहीं कैसे दूं ?
यह मेरा लेख है देखिये इसको ।
लाओ ।
लीजिये ।

अयं लेखो मिथ्या प्रतिभाति ।	यह लेख झूंठ मालूम पड़ता है ।
तस्मात् त्वं षण्मासान् कारागृहे वस तवेमे साक्षिणश्च द्वौ द्वौ मासौ तत्रैव वसेयुः ।	इससे तू छः महीने बन्दीगृह में रह और तेरे साक्षी दो दो महीने वहीं रहें ।

सेव्यसेवकप्रकरणम्

भो मङ्गलदास ! सेवार्थं कैङ्कर्यं करिष्यसि ?	हे मंगलदास ! सेवा के लिये नौकरी करेगा ?
करिष्यामि ।	करूंगा ।
किं प्रतिमासं मासिकं ग्रहितुमिच्छसि ?	प्रति महीने कितना वेतन लिया चाहता है ।
पञ्च रूप्याणि ।	पांच रुपये ।
मयैतावद्दास्यते चेद्यथायोग्या परिचर्य्या विधेया ।	मैं इतना दूंगा जो तुझसे ठीक ठीक सेवा हो सकेगी ।
यदाहं भवन्तं सेविष्ये तदा भवानपि प्रसन्न एव भविष्यति ।	जब मैं आपकी सेवा करूंगा तब आप भी प्रसन्न ही होंगे ।
दन्तधावनमानय ।	दातून ले आ ।
स्नानार्थं जलमानय ।	नहाने के लिये जल ला ।
उत्तरीयं वस्त्रं देहि ।	अंगोछा दे ।
आसनं स्थापय ।	आसन रख ।
पाकं कुरु ।	रसोई कर ।
हे सूद ! त्वयाऽन्नं व्यञ्जनं च सुष्ठु सम्पादनीयम् ।	हे रसोइये ! तू अन्न और शाक आदि उत्तम बना ।
अद्य किं किं कुर्याम् ?	आज क्या क्या करूं ?
पायसमोदकौदनसूपरोटिकाशाकान्युपव्यञ्जनादीनि च ।	खीर, लड्डू, चावल, दाल, रोटी, शाक और चटनी आदि बना ।

मिश्रितप्रकरणम् [१]

नित्यप्रति किं वेतनं दास्यसि ?	नित्यप्रति क्या नौकरी दोगे ?
प्रत्यहं द्वादश पणाः ।	प्रतिदिन बारह पैसे ।
वस्त्राणि श्लक्ष्णे पट्टे प्रक्षालनीयानि ।	कपड़े चिकने साफ़ पत्थर की पटिया पर धोने चाहिये ।
गा वने चारय ।	गायें वन में चरा ।
पुष्पवाटिकायां गन्तव्यमस्ति ।	फूलों की वगीची में जाना है ।
आम्रफलानि पक्वानि न वा ?	आम पके वा नहीं ?
पक्वानि सन्ति ।	पके हैं ।
उपानहावानय ।	जूते लाओ ।

गमनागमनप्रकरणम् [२]

अयं रक्तोष्णीषः क्व गच्छति ?	यह लाल पगड़ीवाला कहां जाता है ?
स्वगृहम् ।	अपने घर को ।
अस्य कदा जन्माऽभूत् ?	इसका जन्म कब हुआ था ?
पञ्च संवत्सरा अतीताः ।	पांच वर्ष बीते ।
परेद्युर्ग्रामो गन्तव्यः ।	कल गांव जाना चाहिये ।
गमिष्यामि ।	जाऊंगा ।
भवान् परेद्युः क्व गन्ता ?	आप कल कहां जाओगे ?
अयोध्याम् ।	अयोध्या को ।
तत्र किं कार्यमस्ति ।	वहां क्या काम है ?
मित्रैः सह मेलनं कर्त्तव्यमस्ति ।	मित्रों के साथ मेल कर्त्तव्य है ।
कदागतोऽसि	कब आया है ?
इदानीमेवाऽऽगच्छामि ।	अभी आता हूं ।

रोगप्रकरणम्

अस्य कीदृशो रोगो वर्त्तते ?
जीर्णज्वरोस्ति ।
औषधं देहि ।
ददामि ।
परन्तु पथ्यं सदा कर्त्तव्यं कुतो नहि पथ्येन विना रोगो निवर्त्तते ।

अयं कुपथ्यकारित्वात् सदा रुग्णो वर्त्तते ।
अस्य पित्तकोपो वर्त्तते ।
मम कफो वर्द्धत औषधं देहि ।

निदानं कृत्वा दास्यामि ।
अस्य महान् कासश्वासोऽस्ति ।

मम शरीरे तु वातव्याधिर्वर्त्तते ।
संग्रहणी निवृत्ता न वा ?
अद्यपर्यन्तं तु न निवृत्ता ।

औषधं संसेव्य पथ्यं करोषि न वा ?

क्रियते परन्तु सुवैद्यो न मिलति कश्चिद्यः सम्यक् परीक्ष्यौषधं दद्यात् ।
तृषाऽस्ति चेज्जलं पिब ।

इसको किस प्रकार का रोग है ?
जीर्णज्वर है ।
औषध दे ?
देता हूँ ।
परन्तु पथ्य सदा करना चाहिये क्योंकि पथ्य के बिना रोग निवृत्त नहीं होता ।

यह कुपथ्यकारी होने से सदा रोगी रहता है ।
इसको पित्त कोप है ।
मेरे कफ बढ़ता जाता है, ओषध दीजिये ।
रोग की परीक्षा करके दूंगा ।
इसको बड़ा कासश्वास अर्थात् दमा है ।
मेरे शरीर में तो वातव्याधि है ।
संग्रहणी छूटी वा नहीं ।
आज तक तो नहीं छूटी ।

औषधि का सेवन करके पथ्य करते हो वा नहीं ?

करता तो हूँ परन्तु अच्छा वैद्य कोई नहीं मिलता कि जो अच्छे द्रकार परीक्षा करके औषध देवे ।
प्यास हो तो जल पी ।

मिश्रितप्रकरणम् [२]

इदानीं शीतं निवृत्तमुष्णसमय आगतः ।
हेमन्ते क्व स्थितः ?
वंगेषु ।
पश्य ! मेघोन्नतिं कथं गर्जति विद्युद् द्योतते च ।
अद्य महती वृष्टिर्जाता यया तडागा नद्यश्च पूरिताः ।
शृणु, मयूराः सुशब्दयन्ति ।
कस्मात् स्थानादागतः ?
जङ्गलात् ।
तत्र त्वया कदापि सिंहो दृष्टो न वा ?
बहुवारं दृष्टः ।
नदी पूर्णा वर्त्तते कथमागतः ?
नौकया ।
आरोहत हस्तिनं गच्छेम ।
अहं तु रथेनागाच्छामि ।
अहमश्वोपरि स्थित्वा गच्छेयं शिविकायां वा ?
पश्य ! शारदं नभः कथं निर्मलं वर्त्तते ।
चन्द्र उदितो न वा ?
इदानीन्तु नोदितः खलु ।
कीदृश्यस्तारकाः प्रकाशन्ते ।

अब तो शीत निवृत्त हुआ, गरमी का समय आया ।
जाड़े में कहां रहा था ?
बङ्गाल में ।
देखो ! मेघ की बढ़ती, कैसा गर्जता और बिजली चमकती है ।
आज बड़ी वर्षा हुई जिससे तालाब और नदियां भर गई ।
सुनो, मोर अच्छा शब्द करते हैं ।
किस स्थान से आया ?
जङ्गल से ।
वहां तूने कभी सिंह भी देखा था वा नहीं ?
कई वेर देखा ।
नदी भरी है, कैसे आया ?
नाव से ।
चढ़ो हाथी पर, चलें ।
मैं तो रथ से आता हूँ ।
मैं घोड़े पर चढ़ के जाऊं अथवा पालकी पर ?
देखो ! शरद ऋतु का आकाश कैसा निर्मल है ।
चन्द्रमा उगा वा नहीं ?
इस समय तो नहीं उगा है ।
किस प्रकार तारे प्रकाशमान हो रहे हैं ।

सूर्योदयाच्चलन्नागच्छामि ।
क्वापि भोजनं कृतन्न वा ?
कृतम्मध्याह्नात् प्राक् ।
अधुनाऽत्र कर्त्तव्यम् ।
करिष्यामि ।

सूर्योदय से चलता हुआ आता हूँ ?
कहीं भोजन किया वा नहीं ?
किया था दोपहर से पहिले ।
अब यहां कीजिये ।
करूंगा ।

विवाहस्त्रीपुरुषालापप्रकरणम्

त्वया कीदृशो विवाहः कृतः ?
स्वयंवरः ।
स्त्र्यनुकूलास्ति न वा ?
सर्वथाऽनुकूलाऽस्ति ।
कत्यपत्यानि जातानि सन्ति ?
चत्वारः पुत्रा द्वे कन्ये च ।
स्वामिन्नमस्ते ।

नमस्ते प्रिये !
कांचित्सेवामनुज्ञापय ।
सर्वथैव सेवसे पुनराज्ञापनस्य कावश्यकताऽस्ति ।

तूने किस प्रकार का विवाह किया था ?
स्वयंवर ।
स्त्री अनुकूल है वा नहीं ?
सब प्रकार से अनुकूल है ।
कितने लड़के [= सन्तान] हुए हैं ?
चार पुत्र और दो कन्या ।
स्वामीजी ! नमस्ते, अर्थात् आपका सत्कार करती हूँ ।
नमस्ते प्रिया !
किसी सेवा की आज्ञा करिये ।
सब प्रकार की सेवा करती ही हो, फिर आज्ञा कराने की क्या आवश्यकता है ।

अद्य भवाञ्च्छ्रमं कृतवानत उष्णेन जलेन स्नातव्यम् ।
गृहाणेदं जलमासनं च ।
इदानीं भ्रमणाय गन्तव्यम् ।

आज आपने श्रम किया है, इस कारण गरम जल से स्नान करना चाहिये ।
लीजिये यह जल और आसन ।
इस समय घूमने के लिये जाना चाहिये ।

क्व गच्छेव ?
उद्यानेषु ।

कहां चलें ?
बगीचों में ।

स्त्रीश्वश्रूश्वशुरादिसेव्यसेवकप्रकरणम्

हे श्वश्रु ! सेवामाज्ञापय किं कुर्याम् ?

सुभगे ! जलं देहि ।

गृहाणेदमस्ति ।

हे श्वशुर ! भवान् किमिच्छत्याज्ञापयतु ।

हे वशंवदे ! नित्यं सदाचारमाचर ।

हे सास ! सेवा की आज्ञा कीजिये क्या करूं ?

सुभगे ! जल दे ।

लीजिये, यह है ।

हे श्वसुर ! आपकी क्या इच्छा है आज्ञा कीजिये ।

हे वशंवदे ! नित्य सती स्त्रियों का आचरण कर ।

ननन्दभ्रातृजायावादप्रकरणम्

हे ननन्दरिहागच्छ वार्त्तालापं कुर्याव ।

वद भ्रातृजाये ! किमिच्छसि ?

तव पतिः कीदृशोऽस्ति ?

अतीव सुखप्रदो यथा तव ।

मया त्वीदृशः पतिः सौभाग्येन लब्धोस्ति ।

कदाचिदप्रियं तु न करोति ?

कदापि नहि किन्तु सर्वदा प्रीतिं वर्द्धयति ।

पश्याभ्यां बाल्यावस्थायां विवाहः कृतोऽतः सदा दुःखिनौ वर्त्तते ।

यान्यपत्यानि जातानि तान्यपि रुग्णान्यग्रेऽपत्यस्याऽऽशैव नास्ति निर्बलत्वात् ।

हे ननन्द ! यहां आओ बातचीत करें ।

कहो भौजाई ! क्या इच्छा है ?

तेरा पति कैसा है ?

अत्यन्त सुख देने वाला है, जैसा तेरा ।

मैंने तो इस प्रकार का पति अच्छे भाग्य से पाया है ।

कभी प्रतिकूल तो नहीं करता ?

कभी नहीं किन्तु सब दिन प्रीति बढ़ाता है ।

देखो इन दोनों ने बाल्यावस्था में विवाह किया है, इससे सदा दुःखी रहते हैं ।

जो लड़के हुए वे भी रोगी हैं, आगे लड़का होने की आशा ही नहीं हैं निर्बलता से ।

पश्य तव मम च कीदृशानि पुष्टान्यपत्यानि द्विवर्षानन्तरं जायन्ते ।
सर्वदा प्रसन्नानि सन्ति वर्द्धन्ते च सुशीलत्वात् ।
नह्यस्मिन् संसारेऽनुकूलस्त्रीपतिजन्यसदृशं सुखं किमपि विद्यते ।

देखो ! तेरे और मेरे कैसे पुष्ट लड़के दो वर्ष के पीछे होते जाते हैं ।
सब काल में प्रसन्न और बढ़ते जाते हैं सुशीलता से ।
इस संसार में अनुकूल स्त्री और पुरुष से होनेवाले सुख के सदृश दूसरा सुख कोई नहीं है ।

इदानीं वृद्धाऽवस्था प्राप्ता यौवनं गतं केशाः श्वेता जाताः प्रतिदिनं बलं ह्रसति च ।
स इदानीं गमनागमनमपि कर्तुमशक्तो जातः ।
बुद्धिविपर्यासत्वाद्विपरीतं भाषते ।

इस समय वृद्धावस्था आई, जवानी गई, बाल सफेद हुए और नित्य बल घट रहा है ।
वह इस समय आने-जाने को भी असमर्थ हो गया है ।
बुद्धि विपरीत होने से उलटा बोलता है ।

अद्याऽस्य मरणसमय आगत ऊर्ध्वश्वासत्वात् ।
सोऽद्य मृतः ।
नीयतां श्मशानं वैदमन्त्रैर्घृतादिभिर्दह्यताम् ।
शरीरं भस्मीभूतं जातमतस्तृतीयेऽह्नचस्थिसंचयनं कृत्वा पुनस्तन्निमित्तं शोकादिकं किंचिदपि नैव कार्यम् ।

आज इसके मरने का समय आया, ऊपर को श्वास के चलने से ।
वह आज मर गया ।
ले चलो श्मशान को, वेदमन्त्रों करके घी आदि सुगन्ध से जला दो ।
शरीर भस्म हो गया, इससे तीसरे दिन हाड़ों को वेदी से इकट्ठे कर उठा के फिर उसके निमित्त शोकादि कुछ भी न करना चाहिये ।

त्वं मातापित्रोः सेवां न करोष्यतः कृतघ्नो वर्त्तसेऽतो मातापितृसेवा केनापि नैव त्याज्या ।

तू माता-पिता की सेवा नहीं करता इससे कृतघ्नी है, इसलिए माता-पिता की सेवा का त्याग किसी को कभी न करना चाहिये ।

सायंकालकृत्यप्रकरणम्

इदानीन्तु सन्ध्यासमय आगतः सायंसन्ध्यामुपास्य भोजनं कृत्वा भ्रमणं कुरुत ।	अब तो सन्ध्या समय आया, सन्ध्योपासन और भोजन करके घूमना घामना करो ।
अद्य त्वया कियत् कार्यं कृतम् ?	आज तूने कितना काम किया ?
एतावत्कृतमेतावदवशिष्टमस्ति ।	इतना किया और इतना शेष है ।
अद्य कियांल्लाभो व्ययश्च जातः ?	आज कितना लाभ और खर्च हुआ ?
पञ्चशतानि मुद्रा लाभः सार्द्धद्वे शते व्ययश्च ।	पांच सौ रुपये लाभ और अढ़ाई सौ खर्च हुए ।
इदानीं सामगानं क्रियताम् ।	इस समय सामवेद का गान कीजिये ।
वीणादीनि वादित्राण्यानीयताम् ।	वीणादिक बाजे लाइये ।
आनीतानि ।	लाये ।
वाद्यताम् ।	बजाइये ।
गीयताम् ।	गाइये ।
कस्य रागस्य समयो वर्त्तते ?	किस राग की वेला है ?
षड्जस्य ।	षड्ज की ।
इदानीं तु दशघटिकाप्रमिता-रात्र्यागता शयीध्वम् ।	इस समय तो दश घड़ी रात आई, सोइये ।
गम्यतां स्वस्वस्थानम् ।	जाइये अपने अपने घर को ।
स्वस्वशय्यायां शयनं कर्त्तव्यम् ।	अपने अपने पलंग पर सोना चाहिये ।
सत्यमेवमेवेश्वरकृपया सुखेन रात्रिर्गच्छेत्प्रभातं भवेत् ।	सत्य है, ऐसे ही ईश्वर की कृपा से सुखपूर्वक रात बीते और सवेरा होवे ।

शरीराऽवयवप्रकरणम्

अस्य शिरः स्थूलं वर्त्तते ।	इसका शिर बड़ा है ।

देवदत्तस्य मूर्द्धकेशाः कृष्णा वर्त्तन्ते ।	देवदत्त के शिर में बाल काले हैं ।
मम तु खलु श्वेता जाताः ।	मेरे तो सुपेद हो गये ।
तवापि केशा अर्द्धश्वेताः सन्ति ।	तेरे भी बाल आधे सुपेद हैं ।
अस्य ललाटं सुन्दरमस्ति ।	इसका माथा सुन्दर है ।
अयं शिरसा खल्वाटः ।	इसके शिर में बाल नहीं हैं ।
तस्योत्तमे भ्रुवौ स्तः ।	उसकी अच्छी भौंहें हैं ।
श्रोत्रेण शृणोषि न वा ?	कान से सुनता है वा नहीं ?
शृणोमि ।	सुनता हूँ ।
अनया स्त्रिया कर्णयोः प्रशस्तान्याभूषणानि धृतानि ।	इस स्त्री ने कानों में अच्छे सुन्दर गहने पहिने हैं ।
किमयं कर्णाभ्यां बधिरोऽस्ति ?	क्या यह कानों से बहिरा है ?
बधिरस्तु न परन्तु श्रवणे ध्यानं न ददाति ।	बहिरा तो नहीं परन्तु सुनने में ध्यान नहीं देता ।
अयं विशालाक्षः ।	यह अच्छे नेत्रवाला है ।
त्वं चक्षुषा पश्यसि न वा ?	तू आंख से देखता है वा नहीं ?
पश्यामि परन्त्विदानीं मन्ददृष्टिर्जातोहमस्मि ।	देखता हूं, परन्तु इस समय मन्ददृष्टि अर्थात् थोड़ी दृष्टिवाला हो गया हूँ ।
इदानीन्ते रक्ते अक्षिणी कथं वर्त्तते ?	इस समय तेरी आँखें लाल क्यों हैं ?
यतोऽहं शयनादुत्थितः ।	मैं सोके उठा हूँ जिससे ।
स काणो धूर्तोऽस्ति ।	वह काना धूर्त है ।
द्रष्टव्यमयमन्धः सचक्षुष्कवत् कथं गच्छति ?	देखो, यह अन्धा आँखवाले के समान कैसे जाता है ?
तवाऽक्षिणी कदा नष्टे ?	तेरी आँखें कब नष्ट हुईं ?
यदाऽहं पञ्चवर्षोऽभूवम् ।	जब मैं पांच वर्ष का हुआ था ।

इदानीम्मन्नेत्रे रोगोऽस्ति स कथं निवर्त्स्यति ?
अञ्जनाद्यौषधसेवननेन निवर्त्तिष्यते।

तस्य नासिकोत्तमास्ति ।
भवानपि शुकनासिकः ।
घ्राणेन गन्धं जिघ्रसि न वा ?
श्लेष्मकफत्वान्मया नासिकया गन्धो न प्रतीयते ।

अयं पुरुषः सुकपोलोऽस्ति ।
अतिस्थूलत्त्वादस्य नाभिर्गम्भीरा ।

त्वमद्य प्रसन्नमुखो दृश्यसे किमत्र कारणम् ?
अयं सदाऽऽह्लादितवदनो विद्यते ।

अस्यौष्ठौ श्रेष्ठौ वर्त्तेते ।
अयँल्लम्बोष्ठत्वाद्भयङ्करोस्ति ।

सर्वैर्जिह्वया स्वादो गृह्यते ।

वाचा सत्यं प्रियं मधुरं सदैव वाच्यम् ।
नैव केनचित्खल्वनृतादिकं वक्तव्यम् ।

इस समय मेरे नेत्र में रोग है, वह कैसे निवृत्त होगा ?
अञ्जन आदि औषध के सेवन से निवृत्त होगा ।
उसकी नाक अति सुन्दर है ।
आप भी सुग्गे के सी नाकवाले हैं।
नाक से गन्ध सूंघते हो वा नहीं ?
सरदी कफ (जुकाम) होने से मुझको नासिका से गन्ध की प्रतीति नहीं होती ।
यह पुरुष अच्छे गालवाला है ।
बहुत मोटा होने से इसकी नाभि गहरी है ।
तू आज प्रसन्नमुख दिखाई देता है।
इसमें क्या कारण है ?
यह सब दिन प्रसन्नमुख बना रहता है।

इसके ओष्ठ बहुत अच्छे हैं ।
यह लम्बे ओष्ठवाला होने से भयङ्कर है ।
सब लोग जीभ से स्वाद लिया करते हैं ।
वाणी से सत्य, प्रिय और मधुर सब दिन बोलना चाहिये ।
कभी किसी को झूठ नहीं बोलना चाहिये ।

अयं सुदन् वर्त्तते ।
तव दन्ता दृढाः सन्ति चलिता वा ?
मम दृढा अस्य तु त्रुटिताः सन्ति ।

यह अच्छे दांतोंवाला है ।
तेरे दांत दृढ़ हैं वा हिल गये हैं ?
मेरे दृढ़ हैं अर्थात् निश्चल हैं और इस के तो टूट गये हैं ।

मन्मुख एकोऽपि दन्तो नास्त्यतः कष्टेन भोजनादिकं करोमि ।
अस्य श्मश्रूणि लम्बीभूतानि सन्ति ।
अस्य हनुर्महान् वर्त्तते ।
तव चिबुकस्योपरि केशा न्यूनाः सन्ति ।
त्वया कण्ठ इदं किमर्थं बद्धम् ?
अस्योरू विस्तीर्णौ स्तः ।
त्वया हृदये किं लिप्तम् ?
इदानीं हेमन्तोऽस्त्यतः कुङ्कुम-कस्तूर्यौ लिप्ते ।
तथा हृच्छूलनिवारणायौषधम् ।

मेरे मुख में एक भी दांत नहीं है इससे क्लेश से भोजन करता हूँ ।
इसकी मूंछें लम्बी हैं ।
इसकी ठोड़ी बड़ी है ।
तेरी ठोड़ी के ऊपर बाल थोड़े हैं ।
तूने गले में यह किसलिये बांधा है ?
इसकी जांघ अच्छी तैयार हैं ।
तूने छाती में क्या लगाया है ?
इस समय हेमन्त ऋतु है, इससे केसर और कस्तूरी लेपन किये हैं ।
वैसे ही हृदयशूल निवारण के लिये औषध ।

माणवकः स्तनाद् दुग्धं पिबति पश्य ! देवदत्तोऽयं लम्बोदरो वर्तते ।
अयन्तु खलु क्षामोदरः ।
तव पृष्ठे किं लग्नमस्ति ?
किं स्कन्धाभ्यां भारं वहसि ?

लड़का स्तन से दूध पीता है ।
देख ! देवदत्त यह बड़े पेटवाला अर्थात् तुन्दीला है ।
यह तो छोटे पेटवाला है ।
तेरी पीठ में क्या लगा है ?
क्या तू कन्धों से भार उठाता है ?

पश्याऽस्य क्षत्रियस्य बाह्वोर्बलं येन स्वभुजबलप्रतापेन राज्यं वर्द्धितम् ।

देख ! इस क्षत्रिय का बाहुबल, जिसने अपने बाहुबल के प्रताप से राज्य बढ़ाया है ।

मनुष्येण हस्ताभ्यामुत्तमानि धर्मकार्याणि सेव्यानि नैव कदाचिदधर्म्याणि ।

मनुष्य को चाहिये कि हाथों से उत्तम धर्मयुक्त कर्म करे, न कभी अधर्मयुक्त कर्मों को ।

अस्य करपृष्ठे करतले च घृतं लग्नमस्ति ।

इसके हाथ की पीठ और तले में घी लगा है ।

मुष्टिबन्धने सत्येकत्राऽङ्गुष्ठ एकत्र चतस्रोऽङ्गुलयो भवन्ति ।

मूंठी बांधने में एक ओर अंगूठा और एक ओर चार अंगुली होती हैं ।

शरीरस्य मध्यभागे नाभिः पुरतः पश्चिमतः कटिः कथ्यते ।

शरीर के आगे [के] बीच भाग को नाभि और पीछे के भाग को पीठ कहते हैं ।

अयं मल्लः स्थूलोरुः ।

यह पहलवान मोटी जंघावाला है ।

माणवको जानुभ्यां गच्छति ।

लड़का घुटनों के बल से चलता है ।

अद्यातिगमनेन जङ्घे पीडिते स्तः ।

आज बहुत चलने से जांघें दूखती हैं ।

अहं पद्भ्यां ह्यो ग्राममगमम् ।

मैं पैदल कल गांव को गया था ।

अस्य शरीरे दीर्घाणि लोमानि सन्ति ।

इसके शरीर में वड़े बड़े रोम हैं ।

तव शरीरे च न्यूनानि सन्ति ।

और तेरे शरीर में थोड़े रोम हैं ।

अस्य शरीरचर्म श्लक्ष्णं वर्त्तते ।

इसके शरीर का चमड़ा चिकना है ।

पश्यास्य नखा आरक्ताः सन्ति ।

देख, इसके नख कुछ कुछ लाल हैं ।

अयं दक्षिणेन हस्तेन भोजनं वामेन जलं पिबति ।

यह दाहिने हाथ से भोजन और बायें से जल पीता है ।

इदानीं त्वया श्रमः कृतोऽस्त्यतो धमनी शीघ्रं चलति ।

इस समय तूने श्रम किया है, इससे नाड़ी शीघ्र चलती है ।

अधुना तु ममान्तस्त्वग् दह्यतेऽस्थिषु पीडापि वर्त्तते ।

इस समय मेरे भीतर की त्वचा जलती और हाड़ों में पीड़ा भी है ।

राजसभाप्रकरणम्

तिष्ठ भो देवदत्त ! त्वया सह गच्छामि राजसभाम् ।

ठहर देवदत्त ! तेरे साथ मैं भी राजसभा को चलता हूँ ।

सभाशब्दस्य कः पदार्थः ?

सभा शब्द का क्या अर्थ है ?

या सत्यासत्यनिर्णयाय प्रकाशयुक्ता वर्त्तंत ।

जो सच-झूठ का निर्णय करने के लिये प्रकाश से सहित हो ।

तत्र कति सभासदः सन्ति ?

वहां कितने सभासद् हैं ?

सहस्रम् ।

हज़ार ।

या मम ग्रामे सभास्ति तत्र खलु पञ्चशतानि सभासदः सन्ति ।

जो मेरे ग्राम में सभा है उसमें तो पांच सौ सभासद् हैं ।

इदानीं सभायां कस्य विषयस्योपरि विचारः कर्त्तव्यः ?

इस समय सभा में किस विषय पर विचार करना चाहिये ?

युद्धस्य ।

युद्ध अर्थात् लड़ाई का ।

तेन सह युद्धं कर्त्तव्यं न वा ?

उसके साथ युद्ध करना चाहिये वा नहीं ?

यदि कर्त्तव्यं तर्हि कथम् ?

यदि करना चाहिए तो कैसे ?

यदि स धर्मात्मा तदा तु न कर्त्तव्यम् ।

यदि वह धर्मात्मा हो तब तो युद्ध करना योग्य नहीं ।

पापिष्ठश्चेत्तर्हि तेन सह योद्धव्यमेव ।

और जो पापी हो तो उसके साथ युद्ध करना ही चाहिये ।

सोऽन्यायेन प्रजां भृशं पीडयत्यतो महापापिष्ठः ।

वह अन्याय से प्रजा को निरन्तर पीड़ा देता है, इस कारण से बड़ा पापी है ।

एवं चेत्तर्हि शस्त्रास्त्रप्रक्षेपयुद्धकुशला-बलिष्ठा कोशधान्यादिसामग्रीसहिता सेना युद्धाय प्रेषणीया ।

यदि ऐसा है तो शस्त्र-अस्त्र चलाने में और युद्ध में कुशल, बड़ी लड़नेवाली, खजाना और अन्नादि सामग्री सहित सेना युद्ध के लिये भेजनी चाहिये ।

सत्यमेवात्र वयं सर्वे सम्मतिं दद्मः ।

सच ही है, इसमें हम सब लोग सम्मति देते हैं ।

इदानीं कस्यां दिशि कैः सह युद्धं प्रवर्त्तते ?

इस समय किस दिशा में कौन कौन के साथ युद्ध होता है ।

पश्चिमायां दिशि यवनैः सह हरिवर्षस्थानाम् ।

पश्चिम दिशा में मुसलमानों के साथ हरिवर्षस्थ अर्थात् यूरोपियन लोगों का ।

पराजिता अपि यवना अद्याप्युपद्रवं न त्यजन्ति ।

हारे हुए मुसलमान लोग अब भी उपद्रव नहीं छोड़ते ।

अयं खलु पशुपक्षिणामपि स्वभावोऽस्ति यदा कश्चित्तद्गृहादिकं गृहीतुमिच्छेत् तदा यथाशक्ति युध्यन्त एव ।

यह तो पशु-पक्षियों का भी स्वभाव है कि जब कोई उनके घर आदि को छीन लेने की इच्छा करता है तब यथाशक्ति युद्ध करते अर्थात् लड़ते ही हैं ।

ग्राम्यपशुप्रकरणम्

भो गोपाल ! गा वने चारय ।

हे अहीर ! गौओं को वन में चरा ।

तत्र या धेनवस्ताभ्योऽर्द्धं दुग्धं त्वया दुग्ध्वा स्वामिभ्यो देयमर्द्धं च वत्सेभ्यः पाययितव्यम् ।

वहाँ जो नई ब्यानी गौयें उनसे आधा दूध तूने दुहकर मालिक को देना और आधा बछड़ों को पिलाना चाहिये ।

एतौ वृषभौ रथे योक्तुं योग्यौ स्तः ।

ये दोनों बैल गाड़ी में वा रथ में जोतने के योग्य हैं ।

इमौ हले खलु ।

और ये दोनों हल ही में ।

पश्येमाः स्थूला महिष्यो वने चरन्ति ।

देखिये, ये मोटी भैंसें वन में चरती हैं ।

आगच्छ भो ! द्रष्टव्यम्महिषाणां युद्धं परस्परं कीदृशं भवति ।

आओ जी ! देखो भैंसों का युद्ध किस प्रकार आपस में हो रहा है ।

अस्य राज्ञो बहवः उत्तमा अश्वाः सन्ति ।

इस राजा के बहुत से उत्तम घोड़े हैं ।

किमियं राज्ञः सतुरङ्गा सेना गच्छति ?

क्या यह राजा की घोड़ों सहित सेना जा रही है ?

श्रोतव्यं हयः कीदृशं ह्रेषन्ते ।

सुनिये, घोड़े किस प्रकार हिनहिनाते हैं ।

यथा हस्तिनो स्थूलाः सन्ति तथा हस्तिन्योऽपि ।

जैसे हाथी मोटे होते हैं वैसे हथिनी भी ।

नागास्समं गच्छन्ति ।

हाथी बराबर चाल से चलते हैं ।

श्रृणु, करिणः कीदृशं बृंहन्ति ।

सुन, हाथी कैसे चिंहारते हैं ।

पश्येमे गजोपरि स्थित्वा गच्छन्ति ।

देख, ये हाथी पर बैठ के जाते हैं ।

अस्य राज्ञः कतीभास्सन्ति ?

इस राजा के कितने हाथी हैं ?

पञ्च सहस्राणि ।

पांच हजार ।

रात्रौ श्वानो बुक्कन्ति ।

रात में कुत्ते भूंसते हैं ।

प्रातः कुक्कुटाः संप्रवदन्ति ।

सवेरे मुरगे बोलते हैं ।

मार्जारो मूषकानत्ति ।

बिल्ला मूसों को खाता है ।

कुलालस्य गर्द्दभा अतिस्थूलाः सन्ति ।

कुम्हार के गदहे अत्यन्त मोटे हैं ।

श्रृणु, लम्बकर्णा रासभा रासन्ते ।

सुन, लम्बे कानों वाले गदहे रेंकते हैं ।

ग्राम्यशूकराः पुरीषं भक्षयित्वा भूमिं शुन्धन्ति ।

गांव के सूवर मैला खाके भूमि को शुद्ध करते हैं ।

उष्ट्रा भारं वहन्ति ।

ऊंट बोझ ढ़ोते हैं ।

अजाविपालोऽजा अवीर्दोग्धि ।

गड़रिया बकरी और भेड़ों को दुहता है ।

पशवोऽपुर्नद्यां जलम् ।	पशुओं ने नदी में जल पिया था ।
रक्तमुखो वानरोऽतिदुष्टो भवति कृष्णमुखस्तु श्रेष्ठः खलु ।	लाल मुख का बन्दर बड़ा दुष्ट और और काले मुंह का लंगूर तो अच्छा होता है ।
वानरी मृतकमपि बालकं न त्यजति ।	बन्दरी मरे हुए बच्चे को भी नहीं छोड़ती ।
गोपालेन गावो दुग्धाः पयो न वा ?	ग्वाले ने गौओं से दूध दुहा वा नहीं ?
कपिलाया गोर्मधुरं पयो भवति ।	कपिला (पीली) गाय का दूध मीठा होता है ।
अयं वृषभः कियता मूल्येन क्रीतः ।	यह बैल कितने मोल से खरीदा है ?
शतेन रूप्यैः ।	सौ रुपयों से ।
कतिभिः पणैः प्रस्थं पयो मिलति ?	कितने पैसे सेर दूध मिलता है ?
द्वाभ्यां पणाभ्याम् ।	दो पैसों से ।
पश्य देवदत्त ! वानराः कथमुत्प्लवन्ते ?	देख, देवदत्त ! बन्दर कैसे कूदते हैं ?
अयं महाहनुत्वाद्धनुमान्वर्त्तते ।	यह बन्दर बड़ी ठोड़ीवाला होने से हनुमान् है ।

ग्रामस्थपक्षिप्रकरणम्

एताभ्यां चटकाभ्यां प्रासादे नीडं रचितम् ।	इन चिड़ियों ने अटारी पर घोंसला बनाया है ।
अत्राण्डानि धृतानि ।	यहां अण्डे धरे हैं ।
इदानीं तु चाटकैरा अपि जाताः ।	अब तो इनके बच्चे भी हो गये हैं ।
पश्य, विष्णुमित्र ! कुक्कुटयोर्युद्धम् ।	देख, विष्णुमित्र ! मुरगों की लड़ाई ।

कुक्कुटी स्वान्यण्डानि सेवते ।
पश्य, शुकानां समूहं यो विरुवन्नुड्डीयते ।
रात्रौ काका न वाश्यन्ते ।
अरे भृत्योड्डायय ध्वांक्षमनेन पातव्यजलपात्रे चञ्चुं निक्षिप्य जलं विनाशितम् ।
वायसेन बालकहस्ताद्रोटिका हृता ।
पश्य, कीदृशं काकोलूकिकं युद्धं प्रवर्त्तते ।
अनेन शुकहंसतित्तिरिकपोताः पालिताः ।

मुरगी अपने अण्डों को सेवती है ।
देख, सुग्गों के झुण्ड को जो चचेंता हुआ उड़ रहा है ।
रात में कौवे नहीं बोलते हैं ।
अरे नौकर ; कौवे को उड़ादे, इसने पीने के जल के बरतन में चोंच डाल कर जल दूषित कर दिया ।
कौवे ने लड़के के हाथ से रोटी लेली ।

देख, किस प्रकार की कौवे और उल्लुओं की लड़ाई हो रही है ।
इसने सुग्गा, हंस, तीतर और कबूतर पाले हैं ।

वन्यपशुप्रकरणम्

वने रात्रौ सिंहा गर्जन्ति ।
शार्दूलं दृष्ट्वा सिंहा निलीयन्ते ।

ह्यः सिंहो गामहन् ।
परश्वो विक्रमवर्मणा सिंहो हतः ।

द्रष्टव्यं हस्तिसिंहरणम् ।
जङ्गले हस्तियूथाः परिभ्रमन्ति ।
इदानीमेव वृकेण मृगो गृहीतः ।
अयं कुक्कुरो बलवाननेन सिंहेन सहाप्याजिः कृता ।
पश्य, सिंहवराहसंग्रामम् ।

वन में रात के समय सिंह गर्जते हैं ।
शार्दूल को देखकर सिंह छिप जाते हैं ।

कल सिंह ने गौ को मार डाला ।
परसों विक्रमवर्मा क्षत्रिय ने सिंह मारा ।
देख, हाथी और सिंह की लड़ाई ।
जंगल में हाथियों के झुण्ड घूमते हैं ।
अभी भेड़िये ने हिरन पकड़ लिया ।
यह कुत्ता बड़ा बलवान् है, इसने सिंह के साथ लड़ाई की ।
देख, सिंह और शूकर का युद्ध ।

शूकरा इक्षुक्षेत्राणि भक्षयित्वा विनाशयन्ति ।
पश्य, वेगेन धावतो मृगान् ।
अयं रुरुर्वृषभवत्स्थूलोस्ति ।
यो निलयाद्वदप्लुत्य धावति स शशस्त्वया दृष्टो न वा ?
बहून् दृष्टवान् ।
कदाचिद्भल्लोऽपि दृष्टो न वा ।
एकदा ऋच्छेन साकं मम युद्धं जातम् ।
रात्रौ शृगालाः क्रोशन्ति ।
कदाचित्खड्गोपि दृष्टो न वा ?
ये आरण्या महिषा बलवन्तो भवन्ति तान्कदाचिद दृष्टवाञ्च वा ?

शूकर ऊख के खेतों को खाकर नष्ट कर देते हैं ।
देख, वेग से दौड़ते हुए हिरनों को ।
यह काला रोज बैल के समान मोटा है ।
जो भांटी से कूदता हुआ दौड़ता है उस खरहा को तूने देखा है वा नहीं ?
बहुतों को देखा है ।
कभी रीछ भी देखे हैं वा नहीं ?
एक समय रीछ के साथ मेरी लड़ाई हुई थी ।
रात्रि में सियार रोते हैं ।
कभी गैंडा भी देखा वा नहीं ?
जो अरणे भैंसे बलवान् होते हैं उनको कभी देखा वा नहीं ?

वनस्थपक्षिप्रकरणम्

कदाचित् सारसाद्यण्डीयमानौ क्रीडन्तौ महाशब्दं कुरुत ।
श्येनेनातिवेगेन वर्त्तिका हता ।
शृणु, तित्तिरयः कीदृशं मधुरं वदन्ति ।
वसन्ते पिकाः प्रियं कूजन्ति ।

कभी सारस पक्षी भी उड़ते और क्रीड़ा करते हुए बड़े शब्द करते हैं ।
बाज ने बड़े वेग से बटेर मारी ।
सुन, तित्तिर किस प्रकार मधुर बोलते हैं ?
वसन्त ऋतु में कोयल प्रिय शब्द करती हैं ।

काककोकिलवद् दुर्वचाः सुवाक् च मनुष्यो भवति ।
अयं देवदत्तो हंसगत्या गच्छति ।
पश्येमे मयूरा नृत्यन्ति ।
उलूका रात्रौ विचरन्ति ।
पश्य, बकः सरस्सु पाखण्डिजनवन्मत्स्यान् हन्तुं कथं ध्यायति ?

बलाका अप्येवमेव जलजन्तून् घ्नन्ति ।
पश्य, कथञ्चकोरा धावन्ति ?
येऽत्यूर्ध्वमाकाशे गत्वा मांसाय निपतन्ति ते गृध्रास्त्वया दृष्टा न वा ?
मैनका मनुष्यवद्वदन्ति ।
चिल्लिका माणवकहस्ताद्रोटिकां छित्वोड्डीयते ।

कौवे और कोयल के सदृश दुष्ट और अच्छा बोलनेवाला मनुष्य होता है ।
यह देवदत्त हंस के समान चलता है ।
देख, ये मोर नाचते हैं ।
उल्लू रात को विचरते हैं ।
देख, बगुला तालाबों में पाखण्डी मनुष्य के तुल्य मछली मारने को किस प्रकार ध्यान कर रहा है ?
बलाका भी इसी प्रकार जलजन्तुओं को मारती हैं ।
देख, किस प्रकार चकोर दौड़ते हैं ?
जो बहुत ऊपर आकाश में जाकर मांस के लिये गिरते हैं वे गीध तूने देखे हैं वा नहीं ?
मैना मनुष्य के समान बोलती हैं ।
चील्ह लड़के के हाथ से रोटी छीन कर उड़ जाती है ।

तिर्यग्जन्तुप्रकरणम्

सर्पाः शीघ्रं सर्प्पन्ति ।
अयं कृष्णः फणी महाविषधारी ।
भवता कदाचिदजगरोऽपि दृष्टो न वा ?
पश्याहिनकुलस्य संग्रामो वर्त्तते ।

स वृश्चिकेन दष्टो रोदिति ।
इयं गोधा स्थूलास्ति ।

सर्प जल्दी सरकते हैं ।
यह काला सांप बड़ा विषवाला है ।
आपने कभी अजगर भी देखा है वा नहीं ?
देख, सांप और नेउले का युद्ध हो रहा है ।
वह बिच्छू से काटा हुआ रोता है ।
यह गोह मोटी है ।

मूषका बिले शेरते ।	मूसे बिल में सोते हैं ।
मक्षिकां भक्षयित्वा वमनं प्रजायते ।	मक्खी खाकर वमन हो जाता है ।
अत्र वासः कर्त्तव्यो निर्मक्षिकं वर्त्तते ।	यहां वास करना चाहिये, मक्खी एक भी नहीं है ।
मधुमक्षिकादशनेन शोथः प्रजायते ।	मधुमक्खियों के काटने से सूजन हो जाती है ।
भ्रमरा गुञ्जन्तः पुष्पेभ्यो गन्धं गृह्णन्ति ।	भौंरे गूंजते हुए, फूलों से सुगन्धि ग्रहण करते हैं ।

जलजन्तुप्रकरणम्

तिमिङ्गला मत्स्याः समुद्रे भवन्ति ।	तिमिङ्गिल मछलियाँ समुद्र में होती हैं ।
रोहित् सिंहतुण्डाराजीवाश्च कुण्ड पुष्करिणीनदीतडागसमुद्रेषु निवसन्ति ।	रोहू, सिंहतुण्ड और राजीव इन नामों की मछलियाँ कुण्ड, बावली, नदी, तालाब और समुद्र में वास करती हैं ।
मकरः पशूनपि गृहीत्वा निगलति ।	मगर पशुओं को भी पकड़ कर निगल जाता है ।
नक्रा ग्राहा अपि महान्तो भवन्ति ।	नाके घरियार भी बड़े बड़े होते हैं ।
कूर्म्माः स्वाङ्गानि संकोच्य प्रसारयन्ति ।	कछुए अपने अङ्गों को समेट कर फैलाते हैं ।
वर्षासु मण्डूकाः शब्दयन्ति ।	वर्षा में मेंढक बोलते हैं ।
जलमनुष्या अप्सु निमज्य तट आसते ।	जल के मनुष्य पानी में डूबकर तीर पर बैठते हैं ।

वृक्षवनस्पतिप्रकरणम्

पिप्पलाः फलिता न वा ?	पीपल फले हैं वा नहीं ?
इमे वटाः सुच्छायास्सन्ति ।	ये वड़ अच्छी छायावाले हैं ।
पश्येम उदुम्बराः सफला वर्त्तन्ते ।	देख, ये गूलर फलयुक्त हो रहे हैं ।
इमे बिल्वाः स्थूलफलास्सन्ति ।	ये वेल बड़े बड़े फलवाले हैं ।
ममोद्यान आम्राः पुष्पिताः फलिताः सन्ति ।	मेरे बग़ीचे में आम फूले-फले हैं ।
इदानीं पक्वफला अपि वर्त्तन्ते ।	इस काल में पके फलवाले भी हैं ।
अस्याऽऽम्रस्य मधुराणि रसवन्ति च फलानि भवन्ति ।	इस आम के मीठे और रसीले फल होते हैं ।
तस्य त्वम्लानि भवन्ति ।	उसके तो खट्टे होते हैं ।
पनसस्य महान्ति फलानि भवन्ति	कटहल के बड़े बड़े फल होते हैं ।
शिंशपायाः काष्ठानि दृढानि सन्ति शालस्य दीर्घाणि च ।	सीसों की लकड़ी दृढ़ होती और सखुवे की लम्बी होती है ।
अस्य बर्बुरस्य कण्टकास्तीक्ष्णा भवन्ति ।	इस बबूल के कांटे तीखी अणीवाले होते हैं ।
बदरीणां तु मधुराम्लानि फलानि कण्टकाश्च कुटिला भवन्ति ।	बेरियों के तो मीठे खट्टे फल और इन के कांटे टेढ़े होते हैं ।
कटुको निम्बो ज्वरं निहन्ति ।	कड़ुआ नीम ज्वर का नाश कर देता है ।
मातुलुङ्गकफलरसं सूपे निक्षिप्य भोक्तव्यम् ।	नींबू का रस दाल में डालकर खाने योग्य है ।
मम वाटिकायां दाडिमफलान्युत्तमानि जायन्ते ।	मेरे वगीचे में अनार बहुत अच्छे होते हैं ।
नवरङ्गीफलान्यानय ।	नारंगी के फलों को ला ।

वसन्ते पलाशाः पुष्यन्ति ।	वसन्त ऋतु में ढाक फूलते हैं ।
उष्ट्राः शमीवृक्षपत्रफलानि भुञ्जते ।	ऊंट शमी अर्थात् खींजड़ (छोंकर) वृक्ष के पत्ते और फलों को खाते हैं ।

औषधप्रकरणम

कदलीफलानि पक्वानि न वा ?	केला के फल पके वा नहीं ?
तण्डुलादयस्तु वैश्यप्रकरणे लिखितास्तत्र द्रष्टव्याः ।	चावल आदि तो बनियों के प्रकरण में लिखे हैं वहां देख लेना ।
विषनिवारणायाऽपामार्गमानय ।	विष दूर करने के लिये चिचिड़ा ला ।
निर्गुण्ड्याः पत्राण्यानेयानि ।	निर्गुण्डी के पत्ते लाने चाहियें ।
लज्जावत्याः किं जायते ।	लज्जावन्ती का क्या होता है ?
गुडूची ज्वरं निवारयति ।	गिलोय ज्वर को शान्त करती है ।
शंखावलीं दुग्धे पाचयित्वा पिबेत् ।	शंखावली को दूध में पका के पिये ।
यथर्त्तुयोगं हरीतकी सेविता सर्वान् रोगान्निवारयति ।	जिस प्रकार से ऋतु ऋतु में हरड़े का सेवन करना योग्य है वैसे सेवी हुई हरड़ सब रोगों को छुड़ा देती है ।
शुण्ठीमरीचपिप्पलीभिः कफवात-रोगौ निहन्तव्यौ ।	सोंठ, मिर्च और पीपल से कफ और वात रोगों का नाश करना चाहिये ।
योऽश्वगन्धं दुग्धे पाचयित्वा पिबति स पुष्टो जायते ।	जो असगन्ध दूध में पका कर पीता है वह पुष्ट होता है ।
इमानि कन्दानि भोक्तुमर्हाणि वर्त्तन्ते ।	ये कन्द खाने के योग्य हैं ।
एतेषां तु शाकमपि श्रेष्ठं जायते ।	इन कन्दों का तो शाक भी अच्छा होता है ।
अस्यां वाटिकायां गुलमगुच्छलताः प्रशंसनीयाः सन्ति ।	इस बगीचे में गुच्छा गुलाब और बेलें प्रशंसा के योग्य अर्थात् अच्छे हैं ।

आत्मीयप्रकरणम्

तव ज्येष्ठो बन्धुर्भगिनी च काऽस्ति ?

तेरे बड़ा भाई और बहिन कौन हैं ?

देवदत्तस्सुशीला च ।

देवदत्त और सुशीला ।

भो बन्धो ! अहं पाठाय व्रजामि ।

हे भाई ! मैं पढ़ने को जाता हूँ ।

गच्छ प्रिय ! पूर्णां विद्यां कृत्वा-ऽऽगन्तव्यम् ।

जा प्यारे ! पूरी विद्या करके आना ।

भवतः कन्या अद्यप्रभृतिः किं पठन्ति ?

आपकी बेटियाँ आजकल क्या पढ़ती हैं ?

वर्णोच्चारणशिक्षादिकं दर्शन-शास्त्राणि चाधीत्येदानीं धर्मपाक-शिल्पगणितविद्या अधीयते ।

वर्णोच्चारण शिक्षादि तथा न्याय आदि शास्त्र पढ़कर अब धर्म, पाक, शिल्प और गणितविद्या पढ़ती हैं ।

भवज्ज्येष्ठया भगिन्या किं किमधीतमिदानीञ्च तया किं क्रियते ?

आपकी बड़ी बहिन ने क्या-क्या पढ़ा है और अब वह क्या करती है ?

वर्णज्ञानमारभ्य वेदपर्यन्ताः सर्वा विद्या विदित्वेदानीं बालिकाः पाठयति ।

अक्षराभ्यास से लेके वेद तक सब पूरी विद्या पढ़ के अब कन्याओं को पढ़ाया करती है ।

तया विवाहः कृतो न वा ?

उसने विवाह किया वा नहीं ?

इदानीं तु न कृतः परन्तु वरं परीक्ष्य स्वयम्वरं कर्तुमिच्छति ।

अभी तो नहीं किया, परन्तु वर की परीक्षा करके स्वयंवर करने की इच्छा करती है ।

यदा कश्चित् स्वतुल्यः पुरुषो मिलिष्यति तदा विवाहं करिष्यति ।

जब कोई अपने सदृश पति मिलेगा तब विवाह करेगी ।

तव मित्रैरधीतं न वा ?

तेरे मित्रों ने पढ़ा है वा नहीं ?

सर्व एव विद्वांसो वर्त्तन्ते यथाऽहं तथैव तेऽपि, समानस्वभावेषु मैत्र्यास्सम्भवात् ।
तव पितृव्यः किं करोति ?
राज्यव्यवस्थाम् ।
इमे किं तव मातुलादयः ?
बाढमयं मम मातुल इयं पितृष्वसेयं मातृष्वसेयं गुरुपत्न्ययं च गुरुः ।

इदानीमेते कस्मै प्रयोजनायैकत्र मिलिताः ?
मया सत्कारायाऽऽहूताः सन्त आगताः ।
इमे मे मातामहीश्वसुरश्यालादयः सन्ति ।
इमे मम मित्रस्य स्त्रीभगिनीदुहितृजामातारः सन्ति ।
इमौ मम पितुःश्यालदौहित्रौ स्तः ।

सब ही विद्वान् हैं, जैसा मैं हूँ वैसे वे भी हैं, क्योंकि तुल्य स्वभाववालों में मित्रता का सम्भव है ।
तेरा चाचा क्या करता है ?
राज्य का कारबार ।
ये क्या तेरे मामा आदि हैं ?
ठीक; यह मेरा मामा, यह बाप की बहिन भूआ, यह माता की बहिन मौसी, यह गुरु की स्त्री और यह गुरु है ।
इस समय ये सब किसलिये मिलकर इकट्ठे हुए हैं ?
मुझसे सत्कार के अर्थ बुलाये हुए आये हैं ।
ये मेरे नानी, ससुर और साले आदि हैं ।
ये मेरे मित्र की स्त्री, बहिन, लड़की और जमाई हैं ।
ये मेरे मामा और भानेज हैं ।

सामन्तप्रकरणम्

त्वद्गृहनिकटे के के निवसन्ति ?
ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः ।
इमे राजसमीपनिवासिनः ।

तेरे घर के पास कौन कौन रहते हैं ?
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।
ये राजा के समीप रहनेवाले हैं ।

कारुप्रकरणम्

भोस्तक्षंस्त्वया नौविमानरथशकटहलादीनि निर्माय तत्र

हे बढ़ई ! तुझको नावें, विमान, रथ, गाड़ी और हल आदि रचके उनमें

प्रशस्तानि कलाकीलशलाकादीनि संयोज्य दातव्यानि ।	अत्युत्तम कलायन्त्र, कील, कांटे आदि संयुक्त करके देने चाहियें ।
इदं काष्ठं छित्वा पर्य्यङ्कं रचय ।	इस लकड़ी को काट के पलंग बना ।
अस्मात्कपाटा सम्पादनीयाः ।	इससे किवाड़ों को बना ।
इमं वृक्षं किमर्थं छिनत्सि ?	इस वृक्ष को किसलिये काटता है ?
मुषलोलूखयोर्निर्माणाय ।	मूसल और ऊखरी बनाने के लिये ।

अयस्कारप्रकरणम्

भो अयस्कार ! त्वयाऽस्यायसो बाणासिशक्तितोमरमुद्गरशतघ्नि-भुशुण्ड्यो निर्मातव्याः ।	हे लोहकार ! तुझको इस लोहे के बाण, तलवार, बरछी, तोमर, मुद्गर, बंदूक और तोप बना देने चाहियें ।
एतस्य क्षुरादीनि ।	इसके छुरे आदि ।
इमौ कलशकटाहौ त्वया विक्रीयेते न वा ?	ये घड़ा और कड़ाही तुम बेचते हो वा नहीं ?
विक्रीणामि ।	बेचता हूँ ।
एतान् कीलकण्टकान् किमर्थं रचयसि ?	इन कील-कांटों को किसलिये बनाता है ?
विक्रयणाय ।	बेचने के लिये ।

सुवर्णकारप्रकरणम्

त्वया सुवर्णादिकं नैव चोर्यम् ।	तू सोना आदि मत चुराना ।
आभूषणान्युत्तमानि निर्मिमीष्व ।	गहने अच्छे सुन्दर बना ।
अस्य हारस्य कियन्मूल्यमस्ति ?	इस हार का कितना मोल है ?
पञ्च सहस्राणि राजत्यो मुद्राः ।	पांच हजार रुपये ।
इमौ कुण्डलौ त्वया श्रेष्ठौ रचितौ वलयौ तु न प्रशस्तौ ।	ये दोनों कुण्डल तूने अच्छे बनाये परन्तु कड़े तो बिगाड़ दिये ।

एतान्यङ्गुलीयकानि मुक्ताप्रवाल-होरकनीलमणिजटितानि सम्पादय ।	ये अंगूठियाँ मोती, मूंगा, हीरा और नीलमणि से जड़ी हुई बना ।
एतेनालङ्कारा अत्युत्तमा रच्यन्ते ।	इससे गहने बहुत अच्छे बनाये जाते हैं।
नासिकाभूषणं सद्यो निष्पादय ।	नथुनी शीघ्र बना दे ।
इदं मुकुटं केन रचितम् ?	यह मुकुट किसने बनाया ?
शिवप्रतापेन ।	शिवप्रताप ने ।
अस्य सुवर्णस्य कटककङ्कण-नूपुरान् निर्माय सद्यो देहि ।	इससे सोने के कड़ा, कंकणी वा कंगना और बिछिया बनाके शीघ्र दे ।

कुलालप्रकरणम्

भो कुलाल ! कुम्भशरावमृद्-गवकान्निर्मिमीष्व	अरे कुम्हार ! घड़ा, सकोरा और मट्टी की गौओं को बना ।
घटं देह्यनेन जलमानेष्यामि ।	घड़ा दे जल लाऊँगा ।

तन्तुवायप्रकरणम्

भो तन्तुवाय ! अस्य सूत्रस्य पटशाट्युष्णीषाणि वय ।	ओ कोरी ! इस सूत के पटका, साड़ी और पगड़ियाँ बुन ।

सूचीकारप्रकरणम्

भो ! सूच्या किं सीव्यसि ?	ओ ! सूई से क्या सीता है ?
शिरोङ्गरक्षणाधोवस्त्राणि सीव्यामि ।	टोपी, अंगरखा और पाजामा सीता हूँ ।

मिश्रितप्रकरणम् [३]

भो कारुक ! कटं वय ।	अरे चटाईवाले ! चटाई बुन ।
इमे व्याधा मृगादीन्पशून् घ्नन्ति ।	ये बहेलिये हरिन आदि पशुओं को मारते हैं ।

किराता वने निवसन्ति ।
किरात अर्थात् भील लोग वन में रहते हैं ।

सकमलानि सरांसि कुत्र सन्ति ?
कमलवाले तालाब कहां हैं ?

इमे तडागा ग्रीष्मे शुष्यन्ति ।
ये सब तालाब गरमी में सूख जाते हैं ।

कूपाज्जलमानय ।
तू कूए से जल ला ।

अद्य वाप्यां स्नातव्यम् ।
आज बावड़ी में नहाना चाहिये ।

रञ्जकेन शतघ्निभुशुण्ड्यादय-
श्चलन्ति ।
बारूद से बंदूक और तोपें आदि चलती हैं ।

अयं कम्बलस्त्वया कस्माद् गृहीतः
कस्मै प्रयोजनाय च ?
यह कम्बल तूने किससे लिया और किस प्रयोजन के लिये ?

काश्मीराच्छीतनिवारणाय ।
कश्मीर से, जाड़ा छुड़ाने के लिये ।

पश्य माणवकाः क्रीडन्ति ।
देख, लड़के खेलते हैं ।

अस्मिन् गृहे स्रस्तराणि श्रेष्ठानि
सन्ति ।
इस घर में बिछौने अच्छे हैं ।

इमे चोराः पलायन्ते ।
ये चोर लोग भागे जाते हैं ।

तत्र दस्युभिरागत्य सर्वं धनं
हृतम् ।
वहां डाकू लोगों ने आकर सब धन हर लिया ।

द्वापरान्ते युधिष्ठिरादयो बभूवुः ।
द्वापर के अन्त में युधिष्ठिरादि हुए थे ।

मम पादे कण्टकः प्रविष्ट एन-
मुद्धर ।
मेरे पैर में कांटा घुस गया, इसको निकाल ।

केशान् संवय ?
बालों को संभाल ।

भो नापित ! नखाञ्छिन्धि
मुण्डय शिरः श्मश्रूणि च ।
ओ नाऊ ! नखों को काट, शिर मूंड और मूछ भी मूंड ।

अयं शिल्पी प्रासादमत्युत्तमं
रचयति ।
यह राज अटारी बहुत अच्छी बनाता है ।

अयं कोटपालो न्यायकारी वर्त्तते ।	यह कोतवाल न्यायकारी है ।
स तु धर्मात्मा नैवास्त्यन्याय-कारित्वात् ।	वह कोतवाल तो धर्मात्मा नहीं है, अन्यायकारी होने से ।
एते राजमन्त्रिणः कुत्र गच्छन्ति ?	ये राजा के मन्त्री लोग कहां जाते हैं ?
राजसभां न्यायकरणाय यान्ति ।	राजसभा को न्याय करने के लिये ।
भोस्ताम्बूलानि देहि ।	ओ ! पान दे ।
ददामि ।	देता हूँ ।
भोस्तैलकार ! तिलेभ्यस्तैलं निःसार्य्यं देहि ।	ओ तेली ! तिलों से तैल निकाल कर दे ।
दास्यामि ।	दूंगा ।
अरे रजक ! वस्त्राणि प्रक्षाल्य सद्यो देयानि ।	अरे धोबी ! कपड़ों को धोकर शीघ्र देना ।
कपाटान् बधान ।	किवाड़ों को बन्द कर ।
इदानीं प्रातःकालो जातः कपाटा-वुद्घाटय ।	इस समय सवेरा हुआ किवाड़े खोल ।
सर्वे युद्धाय सज्जा भवन्तु ।	सब सिपाही लोग लड़ाई के लिये तैयार हों ।
अर्थिप्रत्यर्थिनौ राजगृहे युध्येते ।	मुद्दई और मुद्दायले कचहरी में लड़ते हैं ।
किमियं गोधूमान् पिनष्टि ?	क्या यह गेहुओं को पीसती है ।
कुतोऽद्य दुर्गे शतघ्न्यश्चलन्ति ?	क्यों आज क़िले में तोपें चलती हैं ?
तेन भुशुण्ड्या सिंहो हतः ।	उसने बन्दूक से बाघ को मारा ।
तेनाऽसिना तस्य शिरश्छिन्नम् ।	उसने तलवार से उसका शिर काट डाला ।

अञ्जनं किमर्थमनक्षि ?
उपानहौ धृत्वा क्व गच्छसि ?
जङ्गलम् ।
किं स्थाल्यामोदनं पचसि सूपं वा ?
कटाहे शाकं पच ।
विरुद्धं वदिष्यसि चेत्तर्हि दन्तांस्त्रोटयिष्यामि ।
तव पितुस्तु सामर्थ्यं नाभूत् तव तु का कथा ।
येन प्रजा पाल्यते स कथन्न स्वर्गं गच्छेत् ?
यो राज्यं पीडयेत्स कथन्न नरके पतेत् ?
येनेश्वर उपास्यते तस्य विज्ञानं कुतो न वर्द्धेत ?
यः परोपकारी स सततं कथन्न सुखी भवेत् ?
अस्यां मञ्जूषायां किमस्ति ?
वस्त्रधने ।
इदानीमपि कुम्भ्यां धान्यं वर्त्तते न वा ?
स्वल्पमस्ति ।
त्वमालसी तिष्ठसि कुतो नोद्योगं करोषि ?
उभयत्र प्रकाशाय देहल्यां दीपं निधेहि ।
तेनासिचर्म्मभ्यां शतेन सह युद्धं कृतम् ।

अञ्जन किसलिये आंजता है ?
जूते पहिन के कहां जाता है ?
जङ्गल को ।
क्या बटुवे में भात पकाता है, वा दाल ?
कड़ाही में तरकारी पका ।
विरुद्ध बोलेगा तो तेरे दाँत तोड़ डालूंगा ।
तेरे बाप का तो सामर्थ्य न हुआ, तेरी तो क्या ही बात कहनी है ।
जिसने प्रजा का पालन किया, वह स्वर्ग को क्यों न जाय ?
जो राज्य को पीड़ा देवे, वह क्यों नरक में न पड़े ?
जो ईश्वर की उपासना करे, उसका विज्ञान क्यों न बढ़े ।
जो परोपकारी है वह सर्वदा सुखी क्यों न होवे ?
इस संदूक में क्या है ?
कपड़ा और धन ।
अब भी कोठी में अन्न है वा नहीं ?
थोड़ा सा है ।
तू आलसी रहता है, उद्योग क्यों नहीं करता ?
दोनों ओर उजियाला होने के लिये दरवाजे पर दिया धर ।
उसने ढाल और तलवार से सौ पुरुषों के साथ युद्ध किया ।

अतिथीन् सेवसे न वा ?
प्रेक्षासमाजं मा गच्छ ।
द्यूतसमाह्वयौ कदापि नैव सेवनीयौ ।

यो मद्यपोऽस्ति तस्य बुद्धिः कथं न ह्रसेत् ?
यो व्यभिचरेत्स रुग्णः कथं न जायेत ?
यो जितेन्द्रियः स सर्वं कर्तुंकुतो न शक्नुयात् ?
योगाभ्यासः कृतो येन ज्ञानदीप्तिर्भवेन्नरः ।
वस्त्रपूतं जलं पेयं मनः पूतं समाचरेत् ।

स भ्रान्तौ कदापि न पतेत् ?
अयं वाचालोऽस्त्यतो बरबरायते ।
भूमितले किमस्ति ?
मनुष्यादयः ।
यः पद्भ्यां भ्रमति सोऽरोगो जायते ।
व्यजनेन वायुं कुरु ।
किं घर्मादागतोऽसि यत् स्वेदो जातोऽस्ति ?

अतिथियों की सेवा करता है वा नहीं ?
कभी मेले-तमाशे में मत जा ।
जो अप्राणी को दाव पर धर के खेलना वह 'द्यूत' और प्राणी को दाव पर धर के खेलना वह 'समाह्वय' कहाता है, उनको कभी न सेवना चाहिये ।
जो मद्य पीनेवाला है, उसकी बुद्धि क्यों न न्यून होवे ?
जो व्यभिचार करे वह रोगी क्यों न होवे ?
जो जितेन्द्रिय है वह सब उत्तम काम क्यों न कर सके ?
जिसने योग का अभ्यास किया है वह ज्ञान प्रकाश से युक्त होवे ।
वस्त्र से पवित्र किया जल पीना चाहिये और मन से शुद्ध जाना हुआ काम करना चाहिये ।
वह भ्रमजाल में कभी नहीं गिरे ।
यह बहुत बोलनेवाला है इसी कारण बड़बड़ाता है ।
भूमि के नीचे क्या है ?
मनुष्य आदि ।
जो पग से चलता है वह रोगरहित होता है ।
पङ्खे से वायु (हवा) कर ।
क्या घास से आया है जो पसीना हो रहा है ?

स्वस्थे शरीरे नित्यं स्नात्वा मितं भोक्तव्यम् ।
जलवायू शुद्धौ सेवनीयौ ।

सर्वर्तुके शुद्धे गृहे निवसनीयम् ।

नैव केनचिन्मलीनानि वस्त्राणि धार्याणि ।
तव का चिकीर्षास्ति ?
गृहं गत्वा भोक्तुम् ।
त्वं सक्तुं भुङ्क्षे न वा ?
घृतदुग्धमिष्टैः सहाऽद्मि ।
त्वयाम्रफलानि चूषितानि न वा ?
उर्वारुकफलान्यत्र मधुराणि जायन्ते ।
इक्षुभ्यो गुडादिकं निष्पद्यते ।
इदानीमाकण्ठं दुग्धं पीतं मया ।
तक्रं देहि ।
अत्र श्वेता शर्करा वर्तते ।
अयं रुच्या दध्नौदनं भुङ्क्ते ।
अद्य मोदका भुक्ता न वा ?
त्वया कदाचित्कृशराऽपि भुक्ता न वा ?
मयाऽपूपा भक्षिताः ।
सशर्करं दुग्धं पेयम् ।
येन धर्मः सेव्यते स एव सुखी जायते ।

अच्छे शरीर होते रोज नहा के थोड़ासा खाना चाहिये ।
पवित्र जल और वायु का सेवन करना चाहिये ।
जो सब ऋतुओं में सुख देनेवाला हो उसी घर में रहना चाहिये ।
किसी को भी मैले कपड़े पहिनने न चाहियें ।
तेरी क्या करने की इच्छा है ?
घर जाके खाने की ।
तू सत्तू खाता है वा नहीं ?
घी, दूध और मीठे के साथ खाता हूँ ।
तूने आम चूसे वा नहीं ?
खरबूजे के फल यहां मीठे होते हैं ।
ऊख आदि से गुड़ आदि बनाये जाते हैं ।
इस समय गले तक मैंने दूध पिया ।
मठा दे ।
यहां सफ़ेद चीनी है ।
यह प्रीति से दही के साथ भात खाता है ।
आज लड्डू खाये वा नहीं ?
तूने कभी खिचड़ी भी खाई वा नहीं ?

मैंने मालपूवे खाये हैं ।
शक्कर के सहित दूध पीना चाहिये ।
जो धर्म्म का सेवन करता है वही सुखी रहता है ।

लेख्यलेखकप्रकरणम्

मनुष्यो लेखाभ्यासं सम्यक् कुर्यात् ।	मनुष्य लिखने का अभ्यास अच्छे प्रकार करे ।
अयमत्युत्तममक्षरविन्यासं करोति ।	यह अत्युत्तम अक्षर लिखता है ।
लेखनीं सम्पादय ।	कलम बनाओ।
मसीपात्रमानय ।	दवात ला ।
पुस्तकं लिख ।	पोथी लिख ।
तत्र पत्रं लिखित्वा प्रेषितं न वा ?	वहां चिट्ठी लिखकर भेजी वा नहीं ?
प्रेषितं पञ्च दिनानि व्यतीतानि तस्य प्रत्युत्तरमप्यागतम् ।	भेजी, पांच दिन बीते, उसका जवाब भी आ गया ।
सुवर्णाक्षराणि लिखितुं जानासि न वा ?	सुनहरी अक्षर लिखने जानता है वा नहीं ?
जानामि तु परन्तु सामग्रीसञ्चयने लेखने च विलम्बो भवति ।	जानता तो हूँ परन्तु चीज इकट्ठी करने और लिखने में देर होती है ।
यद्यंगुष्ठतर्जनीभ्यां लेखनीं गृहीत्वा मध्यमोपरि संस्थाप्य लिखेत्तर्हि प्रशस्तो लेखो जायेत ।	जो अंगूठा तर्जनी अंगुली से कलम को पकड़कर बीचली अंगुली पर रख कर लिखे तो बहुत अच्छा लेख हो ।
अयमतीव शीघ्रं लिखति ।	यह अत्यन्त जल्दी लिखता है ।
एतस्य लेखनी मन्दा चलति ।	इसकी लेखनी धीरे चलती है ।
यदि त्वमेकाहं सततं लिखेस्तर्हि कियतः श्लोकांल्लिखितुं शक्नुयाः ?	यदि तू एक दिन निरन्तर लिखे तो कितने श्लोक लिख सके ?
पञ्चशतानि ।	पांच सौ ।
यदि शिक्षां गृहीत्वा शनैः शनैर्लिखितुमभ्यस्येत्तर्ह्यक्षराणां सुन्दरं स्वरूपं स्पष्टता च जायेत ।	यदि शिक्षा ग्रहण कर के धीरे धीरे लिखने का अभ्यास करे तो अक्षरों का दिव्यस्वरूप और स्पष्टता होवे ।

अस्मिंल्लाक्षारसे कज्जलं सम्मेलितं न वा ?
मेलितं तु न्यूनं खलु वर्त्तते ।
मनुष्यैर्यादृशः पठनाभ्यासः क्रियेत तादृश एव लेखनाभ्यासोऽपि कर्त्तव्यः ।
मया वेदपुस्तकं लेखयितव्यमस्त्येकेन रूप्येण कियतः श्लोकान् दास्यसि ?
अत्युत्तमानि ग्रहीष्यसि चेत्तर्हि शतत्रयं मध्यानि चेच्छतपञ्चकम् ।
साधारणानि चेत्सहस्रं श्लोकान् दास्यामि ?
शतत्रयमेव ग्रहीष्यामि परन्त्वत्युत्तमं लिखित्वा दास्यसि चेत् ।
वरमेवं करिष्यामि ।

इस लाख के रस में कज्जल मिलाया है वा नहीं ?
मिलाया तो है परन्तु थोड़ा है ।
मनुष्य लोग जैसा पढ़ने का अभ्यास करें वैसा ही लिखने का भी करना चाहिये ।
मुझको वेद का पुस्तक लिखाना है, एक रुपये से कितने श्लोक देगा ?
जो बहुत अच्छे लोगे तो तीन सौ और मध्यम लोगे तो पांच सौ ।
यदि बहुत साधारण वा घटिया लोगे तो हज़ार श्लोक दूंगा ।
तीनसौ ही लूंगा परन्तु बहुत अच्छा लिख कर देगा तो ।
अच्छा, ऐसा ही करूंगा ।

मन्तव्यामन्तव्यप्रकरणम्

त्वं जगत्स्रष्टारं सच्चिदानन्दस्वरूपं परमेश्वरं मन्यसे न वा ?

अयं नास्तिकत्वात् स्वभावात् सृष्ट्युत्पत्तिं मत्वेश्वरं न स्वीकरोति ।
यद्ययं कर्तृकार्यरचकरचनाविशेषान् संसारे निश्चिनुयात्तर्ह्यवश्यं परमात्मानं मन्येत ।

तू इस संसार के बनानेवाले सत्, चित् और आनन्दस्वरूप परमेश्वर को मानता है वा नहीं ?
यह मनुष्य नास्तिक होने से स्वभाव से सृष्टि की उत्पत्ति को मानकर ईश्वर को नहीं मानता ।
जो यह नास्तिक कर्त्ता क्रिया बनानेहारा और बनावट को इस जगत् में निश्चय करे तो अवश्य ईश्वर को माने ।

योऽत्र सृष्टौ रचितरचनां पश्यति स जीवः कार्य्यवत्स्रष्टारं कुतो न मन्येत ?

जो इस सृष्टि में बने हुए पदार्थों की बनावट को प्रत्यक्ष देखता है वह जैसा कारीगरी को देख के कारीगर का निश्चय करते हैं वैसे जगत् के बनाने वाले परमात्मा को क्यों न माने ?

यत्रोत्तमा धार्मिका आस्तिका विद्वांसोऽध्यापका उपदेष्टारश्च स्युस्तत्र कोऽपि कदाचिन्नास्तिको भवितुं नैवार्हेत ।।

जहां श्रेष्ठ, धर्मात्मा, आस्तिक, विद्वान् लोग पढ़ानेवाले और उपदेशक हों वहाँ कोई भी मनुष्य नास्तिक कभी नहीं हो सकता ।

कैः कर्मभिर्मुक्तिर्भवति तदा क्व वसन्ति तत्र किं भुज्यते च ?

किन कर्मों से मुक्ति होती है, उस समय कहां वास करते और वहाँ क्या भोगते हैं ?

धर्म्यैः कर्मोपासनाविज्ञानैर्मुक्तिर्जायते,तदानीं ब्रह्मणि निवसन्ति परमानन्दं च सेवन्ते ।

धर्मयुक्त कर्म, उपासना और विज्ञान से मोक्ष होता है, उस समय ब्रह्म में युक्त जीव रहते और परम आनन्द का सेवन करते हैं ।

मोक्षं प्राप्य तत्र सदा वसन्त्वाहोस्वित् कदाचित्ततो निवृत्य पुनर्जन्ममरणे प्राप्नुवन्ति ?

जीव मुक्ति को प्राप्त होके वहाँ सदा रहते हैं अथवा कभी वहाँ से निवृत्त होकर पुनः जन्म और मरण को प्राप्त होते हैं ?

प्राप्तमोक्षा जीवास्तत्र सर्वदा न वसन्ति, किन्तु महाकल्पपर्यन्तमर्थाद् ब्राह्ममायुर्यावत्तात्तत्रोषित्वाऽऽनन्दं भुक्त्वा पुनर्जन्ममरणे प्राप्नुवन्त्येव ।

मुक्ति को प्राप्त हुए जीव वहां सर्वदा नहीं रहते, किन्तु जितना ब्राह्म कल्प का परिमाण है उतने समय तक ब्रह्म में वास कर आनन्द भोग के फिर जन्म और मरण को अवश्य प्राप्त होते हैं ।

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना निर्मितः संस्कृतवाक्यप्रबोधनामको निबन्धः समाप्तः ।।

परिशिष्ट

[संस्कृतवाक्यप्रबोध के सम्बन्ध में श्री पं० अम्बिकादत्त ने आक्षेप किया था, जिसका उत्तर किसी पण्डित ने दिया जो ऋषि दयानन्द के पत्र व विज्ञापन में निम्न प्रकार प्रकाशित है---]

१—येन शरीराच्छ्रमो न क्रियते स नैव शरीरसुखमवाप्नोति ।

पृ० ७ । पं० १ ॥

यहां पण्डित अम्बिकादत्तजी लिखते हैं कि (शरीरात्) इस पद में पञ्चमी विभक्ति अशुद्ध है किन्तु (शरीरेण) ऐसा चाहिये । सो यह सन्देह कारक-व्यवस्था को ठीक-ठीक नहीं विचारने से हुआ है । देखो श्रम कहते हैं पुरुषार्थ करने को । उसका कर्त्ता जीवात्मा और शरीर आश्रय रहता है । क्योंकि **चेष्टेन्द्रियार्थाश्रयः शरीरम्** । चेष्टा अर्थात् क्रिया का जो आश्रय है उसको शरीर कहते हैं । सो यहां **पञ्चमी विधाने ल्यब्लोपे कर्मण्युपसंख्यानम्** । अ० २ । ३ । २८ ॥ इस वार्तिक से (आश्रित्य) इस ल्यबन्त क्रिया के लोप में पञ्चमी विभक्ति हुई है । देखो, ऐसा वाक्यार्थ होगा । **येन पुरुषेण शरीरमाश्रित्य श्रमो न क्रियते**—इत्यादि । जो कहो कि ऐसा अर्थ भाषा में क्यों न किया तो संस्कृत के एक वाक्य का व्याख्यान भाषा में कई प्रकार से कर सकते हैं इसमें कुछ विवाद नहीं है । परन्तु यहां तो प्रयोजन यही है कि भाषा सुगम और थोड़ी हो ऐसा उल्था करना चाहिये । अब पण्डितजी के कहने से तो प्रासादात्प्रेक्षते इत्यादि महाभाष्यकार के प्रयोगों में भी पञ्चमी विभक्ति नहीं होनी चाहिये । और भी पण्डितजी क्या लिखते हैं कि **विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्** । अ० २ । ३ । २५ ॥ भला इसका यहाँ क्या प्रसंग था ? सो जब स्वामीजी के मुख्य अभिप्राय को पण्डितजी न समझे तो जो सूत्र सामने आया लिख बैठे । भला शरीर शब्द को कोई थोड़ी विद्यावाला भी गुणवाचक कह सकता है कि जिससे गुणवाची मान के पञ्चमी विभक्ति हो जावे । और कारक विषय में ऐसा भी नियम है कि—**कारकं चेद्विजानीयाद्यां यां मन्येत सा भवेत्** ।

महाभाष्य १ । ४ । ५१ ॥ अर्थात् यह शब्द क्रिया के किस अंश को सिद्ध करता है ऐसे क्रियासाधक कारक को जान के जिस जिस विभक्ति से वह अर्थ प्रतीत हो सके वह विभक्ति हो जाती है । इन गूढ़ बातों को समझना सबका काम नहीं है ॥ १ ॥

२—चक्रवर्तिशब्दस्य कः पदार्थः ? पृ० ११ पं० ५ ॥

यहां पण्डितजी लिखते हैं कि चक्रवर्ति शब्द का क्या अर्थ है इसकी संस्कृत यही होगी । इनको भाषा का भी बोध है जैसा विदित हो गया . भला संस्कृत शब्द को स्त्रीलिंग पण्डितजी ने किस व्याकरण से किया । यह संस्कृत प्राचीन ऋषि-मुनियों के अनुकूल है, इसमें कुछ दोष नहीं । देखो, महाभाष्य में लिखा है कि अथ शब्दसिद्धस्य कः पदार्थः ? अ० १ । पाद ११ । आह्निक १ ॥ इसका क्या यह अर्थ नहीं है कि सिद्ध शब्द का क्या अर्थ है ? बड़े आश्चर्य की बात है कि प्राचीन ग्रन्थों को बिना देखे दोष देने लगते हैं । अब पण्डितजी का लगाया दोष कुछ स्वामीजी को ही लगे हो सो नहीं किन्तु इन्होंने तो सब ऋषि-मुनियों को दोष लगा दिया औ सापेक्षमसमर्थं भवतीति । महाभाष्य २ । १ । १ ॥ यह दोष यहां कर्भ नहीं आता क्योंकि यहां एक देश के साथ अन्वय नहीं है । और इसी प्रका सभा शब्दस्य कः पदार्थः ? इसको शुद्ध समझ लेना ॥ २ ॥

३—अस्मिन् समये तु मम सामर्थ्यं नास्ति षण्मासानन्तरं दास्यामि (महा० २ । १ । १) पृ० १९ । २४ ।

यहां 'षण्मास' शब्द में पण्डित जी को सन्देह हुआ है कि यहाँ द्विगोः । अष्टा० ४ । १ । २१ ॥ इस सूत्र से ङीप् होके षण्मासी शुद्ध होत है । इस भ्रम का मूल यही है कि उनको व्याकरण के सब सूत्र विदित नह हैं । पण्डितजी के कथनानुसार यदि स्वामीजी का लेख अशुद्ध भी माना जा तो फिर पाणिनि मुनि का सूत्र भी अशुद्ध मानना चाहिये । सू० षण्मासा ण्यच्च । अ० ५।१।८३॥ यहां पण्डितजी के मतानुसार षण्मास्या ण्यच्च इस प्रकार का सूत्र होना चाहिये । अब देखिये पाणिनीय सूत्र को यि

पण्डितजी जानते होते तो स्वामीजी के लेख को मिथ्या दोष क्यों लगाते और छोटे छोटे बालक कि जो अष्टाध्यायी के सूत्र भी घोखते हैं वे भी जानते हैं कि यह सूत्र ऐसा है। इस प्रकार के बहुत से प्रयोग व्याकरण आदि शिष्ट जनों के ग्रन्थों में आते हैं तो क्या सब अशुद्ध हैं। अब रहा कि ङीप् क्यों नहीं होता तो पात्रादिभ्यः प्रतिषेधः। महा० २।४।१७॥ यह वार्तिक इसीलिये है। पात्रादि आकृतिगण हैं। इसका परिगणन कहीं नहीं किया कि इतने ही पात्रादि शब्द हैं। महाभाष्यकार ने तो इस वार्तिक पर उदाहरण मात्र दिया है। अब इसी प्रकार 'द्विवर्षानन्तरम्' इसको भी शुद्ध समझ लेना चाहिये। पाणिनिजी महाराज ने अपने सूत्र में 'षण्मास' शब्द को पढ़ा है। इससे यह भी उनका उपदेश प्रसिद्ध विदित होता है कि 'षण्मास' आदि शब्दों में ङीप् कदापि नहीं होता और कोई किया चाहे तो अशुद्ध ही है* ॥ ३ ॥

* आर्यदर्पण मई १८८० पृ० १२० पर छपा। वह अङ्क अगस्त के अन्त या सितम्बर के आरम्भ में छपा होगा। देखा श्रावण शु० १३ सं० १९३७ (१८ अगस्त १८८०) का पत्र।